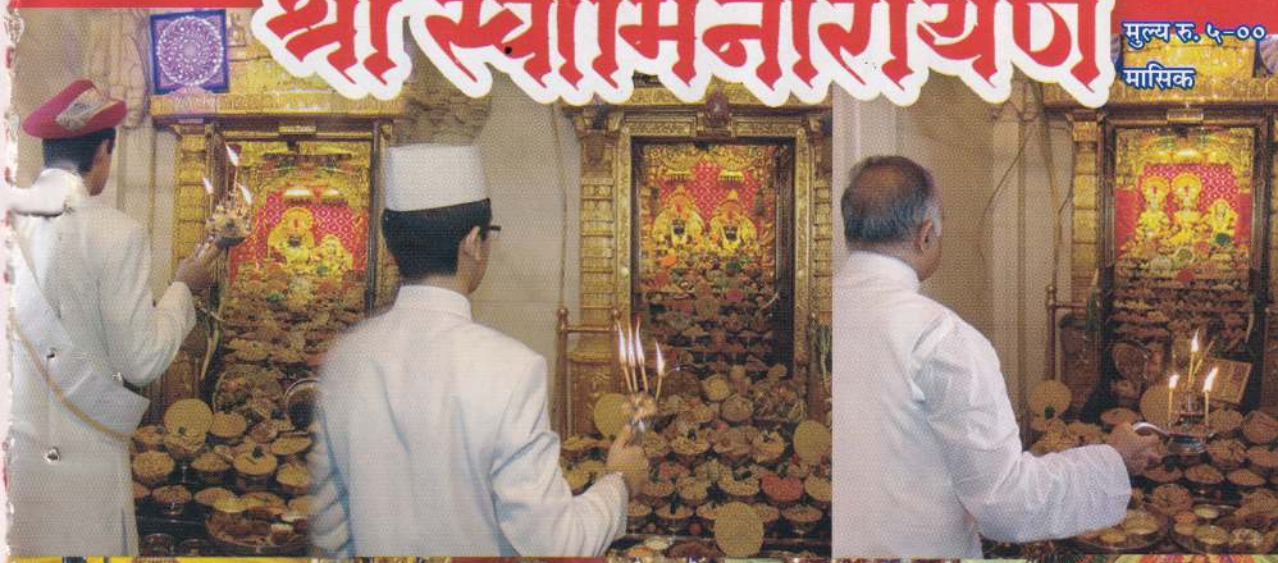
सलंग अंक ४३-४४ नवंबर - दिसंबर - २०१०

# श्री स्वामिनारायण

मुल्य रु. ५-००
मासिक







प्रकाशक : श्री स्वामिनारायण मंदिर अहमदाबाद-३८०००१.

# अन्नकूट दर्शन



जेतलपुर



मूली



नारायणघाट



ईडर



स्ट्रेधाम



कलिवलेन्ड



लेस्टर



एटलान्टा



सीडनी



टोरेन्टो



सिनेमिन्शन



शिकागो




संस्थापक
श्री नरनारायणदेव पीठाधिपति
प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री १००८
श्री तेजेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री
श्री स्वामिनारायण म्युजियम
नारायणपुरा, अहमदाबाद.
फोन : २७४१९५९७ - ९८२५३०९५९७
फोक्स : २७४१९५९७
www.swaminarayanmuseum.com
दूर ध्वनि
२२१३३८३५ ( मंदिर )
२७४७८०७० ( स्वा. बाग )
फेक्स : ०७९-२७४५२१४५
श्री नरनारायणदेव पीठाधिपति
प.पू.ध.धु. आचार्य १००८
श्री कोशलेन्द्रप्रसादजी महाराजश्रीकी आज्ञा से
तंत्रीश्री
स.गु. शास्त्री स्वामी हरिकृष्णदासजी ( महंत स्वामी )
पत्र व्यवहार
श्री स्वामिनारायण मासिक कार्यालय
श्री स्वामिनारायण मंदिर कालुपुर,
अहमदाबाद-३८० ००१.
दूर ध्वनि : २२१३२१७०, २२१३६८१८.
फोक्स : २२१७६९९२
www.swaminarayan.info
www.swaminarayan.in
पतेमें परिवर्तन के लिये
E-mail : manishnvora@yahoo.co.in

मूल्य
प्रति वर्ष ५०-००
वंशपारंपरिक
देश में ५०१-००
विदेश १०,०००-००
प्रति कोपी ५-००


# श्री स्वामिनारायण

## श्री नरनारायणदेव पीठस्थान मुखपत्र


वर्ष - ४ अंक : ४३-४४ नवम्बर-दिसम्बर-२०१०


## अ नु क्र म णि का


| | | |
|---|---|---|
| १. | अस्मदीयम् | ०२ |
| २. | प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री के कार्यक्रम की रूपरेखा | ०३ |
| ३. | दर्शनम् | ०५ |
| ४. | चोरी न करनी काहु हकी | ०७ |
| ५. | दिन-दिन दीवाली (प्रतिदिन दिपावली) | ०९ |
| ६. | आज कलियुग में भी चमत्कार | ११ |
| ७. | कार्तिक शुक्ल-११ अर्थात् धर्म को स्मरण करने का दिन | १३ |
| ८. | संस्कृत तथा व्रजभाषा के समर्थ काव्य सम्राट आचार्य महाराजश्री देवेन्द्रप्रसादजी पांडे कविवर (कूट) | १५ |
| ९. | स्वामी नित्यानंद स्वामी का जीवन कवन | १७ |
| १०. | रंग महोल के श्री घनश्याम महाराज का १२५ वाँ पाटोत्सव मनाया गया | १९ |
| ११. | श्री सहजानंद स्वामीने भुज में अति उमंग उल्लास के साथ दीपोत्सव तथा अन्नकूट उत्सव किया था | २१ |
| १२. | प.पू. आचार्य महाराजश्री का ईडर शहर में ३८ वाँ प्रागट्योत्सव | २३ |
| १३. | प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री का ओस्ट्रेलिया धर्म प्रवास | २५ |
| १४. | बद्रिनारायण - केदारनाथ यात्रा | २७ |
| १५. | सत्संग सुरभि | २८ |
| १६. | सत्संग बालवाटिका | ३० |
| १७. | भक्ति सुधा | ३२ |
| १८. | सङ्गसंग समाचार | ३७ |

# अस्मदीयम्

श्री स्वामिनारायण मासिक के सभी सदस्यों को, वाचकों को तथा लेखकों को नूतन वर्ष का शुभ नूतन वर्षाभिनंदन के साथ जयश्री स्वामिनारायण।

संवत् २०६७ का नूतन वर्ष आप सभी के लिये सुखद, मंगलमय तथा स्वास्थ्य के लिये सानुकुल रहे, परिवार में सुख-शांति तथा एकता बनी रहे और विशेष रुप से आपके जीवन में उत्तरोत्तर प्रगति हो इसके साथ ही जो यथार्थरुप में करना है वह भगवान श्री स्वामिनारायण की अधिक से अधिक भजन भक्ति हो तथा भगवान श्री नरनारायणदेव की निष्ठा में उत्तरोत्तर वृद्धि हो ऐसी परम कृपालु इष्टदेव श्रीहरि के चरणों में प्रार्थना।

प.पू. बड़े महाराजश्री तेजेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री का दिव्य संकल्प श्री स्वामिनारायण म्युझियम के उद्घाटन के प्रसंग पर आगामी फाल्गुन शुक्ल-३ ता. ८ मार्च २०११ को श्री नरनारायण देव के पाटोत्सव के शुभ अवसर पर खूब धूमधाम के साथ भव्यातिभव्य ढंग से मनाया जायेगा। इस अवसर पर देश-विदेश के समस्त हरिभक्त लाभ लेने पधारने वाले हैं।

इस महा भगीरथ सेवा यज्ञ में किसी कारण विशेष से या संयोगवश सेवा से वंचित रह गये हो तो अभी भी अवसर गवाने का समय नहीं है। यथा संभव इस सेवा कार्य में लाभ लेकर अपने जीवन को धन्य बनायें। यह अवसर चूक जाने पर पुनः जीवन में नहीं मिलेगा। आप सभी के ऊपर सर्वोपरि श्रीहरि की सर्व प्रकार से अनुकम्पा बनी रहे ऐसी प्रभु के चरणों में प्रार्थना।

तंत्रीश्री (महंत स्वामी)
शास्त्री स्वामी हरिकृष्णदासजी का
जयश्री स्वामिनारायण

# प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री के कार्यक्रम की रुपरेखा

## (अक्टूबर-नवम्बर-२०१०)

३. श्री स्वामिनारायण मंदिर उनावा महापूजा प्रसंग पर पदार्पण । वहाँ से गांधीनगर पदार्पण।

५. श्री जयन्तीभाई नरसीभाई पटेल के यहाँ पदार्पण, मेमनगर।

८. श्री राजेन्द्रभाई ठाकरसीभाई पटेल के यहाँ पदार्पण, मेमनगर।

९. श्री धीरुभाई पाचाभाई पटेल के यहाँ पदार्पण, सेटेलाइट।

१०. श्री कनुभाई कुरजीभाई पटेल के यहाँ पदार्पण, बापूनगर।

श्री गांडालाल कालीदास पटेल के फैक्टरी के उद्घाटन प्रसंग पर पदार्पण, सांतेज।

१४. श्री प्रकाशभाई अंबालाल प्रजापति के शोरुम के उद्घाटन प्रसंग पर पदार्पण, बोपल।

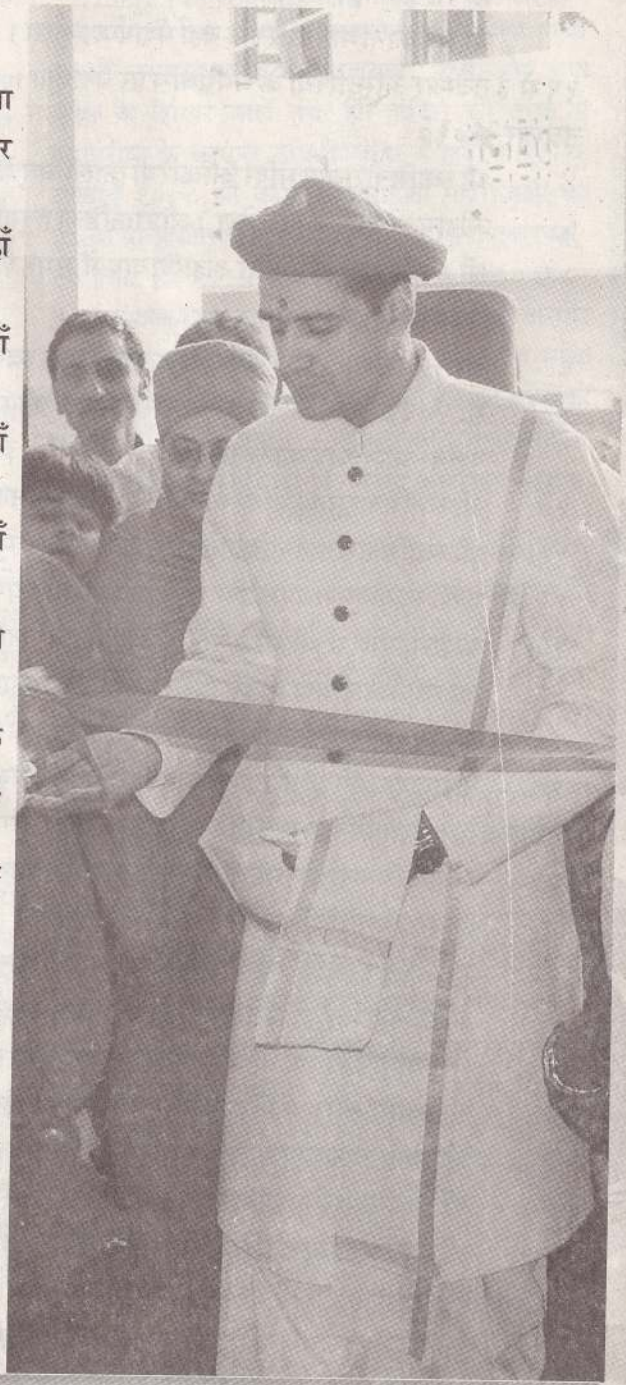
श्री अरविंदभाई हरिभाई ढोलरिया के यहाँ हरियाग प्रसंग पर पदार्पण, बोपल।

१५. अक्षर महोलवाडी जेतलपुर श्री स्वामिनारायण संस्कृत महा विद्यालय के सरस्वती पूजन प्रसंग पर पदार्पण।

१६. श्री किरीटभाई रमणभाई के यहाँ पदार्पण, राणीप।

श्री राजेशभाई विठ्ठलभाई शाह के यहाँ पदार्पण, शीलज।

१७. ३८ वें प्रागट्योत्सव का साबरकांठा के ईडर



श्री स्वामिनारायण मंदिर में सत्संग सभा द्वारा धूमधाम के साथ मनाया गया था।

श्री भीखाभाई विहीदास पटेल के यहाँ पदार्पण, सोला रोड।

श्री सूर्यकान्तभाई पटेल के यहाँ पदार्पण, ऊँझा।

१९ से ३ नवेम्बर ओस्ट्रेलिया के धर्मप्रवास पर पदार्पण।

नवम्बर-२०१०

४. श्री स्वामिनारायण मंदिर कांकरिया काली चतुर्दशी को श्री हनुमानजी के पूजन प्रसंग पर पदार्पण।

५. जीरागढ ( हालार मूली देश ) श्री रोकडिया हनुमानजी महाराज के पाटोत्सव प्रसंग पर पदार्पण।

श्री स्वामिनारायण मंदिर अहमदावाद में समूह शारदा पूजन एवं चोपड़ा पूजन अपने वरद् हाथों से संपन्न किये।

६. श्री नरनाराणादि देवों के अन्नकूट की आरती स्वयं उतारे।

७. सं. २०६७ नूतन वर्ष के श्री नरनारायणदेव की मंगला आरती उतारकर बैठक में संत-हरिभक्तों को दर्शन-आशीर्वाद का सुख दिये।

१०. श्री स्वामिनारायण मंदिर कांकरिया श्री हनुमानजी के अभिषेक प्रसंग पर पदार्पण।

११. श्री स्वामिनारायण मंदिर मोटा अंकेवालिया ( मूलीदेश ) पुनः मूर्ति प्रतिष्ठा प्रसंग पर पदार्पण।

१२ से १४ श्री स्वामिनारायण मंदिर हरिद्वार कथा पारायण प्रसंग पर पदार्पण।

१५. माणसा गाँव में श्री रमेशभाई कचराभाई मंगलदास पटेल के यहाँ पदार्पण।

१६. श्री स्वामिनारायण मंदिर जीवराजपार्क कथा प्रसंग पर पदार्पण।

श्री जीतुभाई मगनलाल लीलाधर सोनी के यहाँ पदार्पण, जीवराज पार्क।

१७. नाराणपुरा श्री स्वामिनारायण मंदिर तुलसी विवाह प्रसंग पर पदार्पण।

१८ से २०. श्री स्वामिनारायण मंदिर भुज पारायण प्रसंग पर पदार्पण।

२१. श्री स्वामिनारायण मंदिर कालीगाँव मूर्ति प्रतिष्ठा प्रसंग पर पदार्पण।

श्री स्वामिनारायण मंदिर कांकरिया पदार्पण।

२२. डुंगरी ( ईडर देश ) गाँव में शोभायात्रा तथा सत्संग सभा प्रसंग पर पदार्पण।

श्री प्रकाशभाई जे. पटेल के यहाँ पदार्पण, थलतेज।

२३. श्री स्वामिनारायण मंदिर सुरेन्द्रनगर पाटोत्सव प्रसंग पर पदार्पण।

२४. श्री स्वामिनारायण मंदिर वावोल पारायण प्रसंग पर पदार्पण।

२५. श्री स्वामिनारायण मंदिर ( मुबारकपुरा ) मूर्ति प्रतिष्ठा प्रसंग पर पदार्पण।

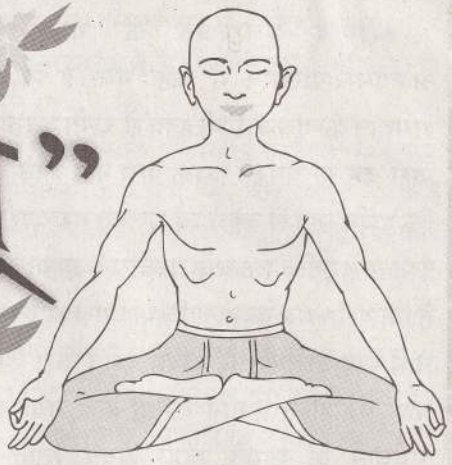
२६. श्री स्वामिनारायण मंदिर ( महिलाओं के ) विरमगाँव पाटोत्सव प्रसंग पर पदार्पण।

२७. श्री स्वामिनारायण मंदिर जीवराज पार्क पुनः मूर्ति प्रतिष्ठा प्रसंग पर पदार्पण.

२९. श्री मेहुलभाई सोनी के यहाँ पदार्पण, नारणपुरा।

३०. श्री स्वामिनारायण मंदिर सलाल कथा प्रसंग पर पदार्पण।

# "दर्शनम्"



- साधु पुरुषोत्तमप्रकाशदास ( जेतलपुरधाम )

वैदिक तथा लौकिक या पौराणिक प्रमाणो से में परमात्मा का दर्शन श्रेष्ठ बताया गया है। तीर्थयात्रा में या नित्यदर्शन के लिये भगवान के मंदिर में जाय तो इसका यथार्थ ज्ञान आवश्यक है। दर्शन करना यह दैनिक क्रिया नहीं है बल्कि देहभाव भूलकर परमात्मा के आनंद प्राप्ति का एक साधन है। अपना देह, धन, धाम पद, प्रतिष्ठा से अलग होकर भगवान के पास जाने की प्रक्रिया है। परमात्मा के दर्शन जैसी अन्य कोई क्रिया नहीं है। भगवान के दर्शन में आतुरता आवश्यक है। दर्शन रोज करते हों लेकिन उसमें उत्साह या आतुरता में वृद्धि न हो तो कोई फायदा नहीं। किसी अन्य काम में जा रहे हों और बगल में मंदिर आजाय फिर दर्शन करने चले जांय तो वह दर्शन नहीं कहा जायेगा। वह एक मात्र व्यवहार कहा जायेगा। दर्शन का मतलब दिन प्रतिदिन उत्साह में वृद्धि। भगवान के दर्शन के लिये जांय तो स्नानादिक क्रिया से शुद्ध होकर नंगे पांव बिना वाहन के जांय, इससे अश्वमेधयज्ञ का फल मिलता है। यदि घर दूर हो विना वाहन के आना असम्भव हो तो वाहन से आकर, वाहन मंदिर के बाहर खड़ा करके नंगे पैर मंदिर में दर्शन के लिये जांय। प्रथम ध्वज का दर्शन करें बाद में सीढी पर चढते समय मंदिर को प्रणाम करें। सीढी को प्रणाम करने का मतलब यह है कि भगवान सीढी से पधारते हैं उनके चरण यहाँ है यह भावना करके, उस रजको अपने मस्तक पर लगाना चाहिये। अन्तिम सीढी को इन्द्र का रुप माना गया है, इसलिये वहाँ पैर रखने से पहले क्षमा मांगना चाहिये। श्रीहरि ने सारंगपुर के वचनामृत में कहा है कि परमात्मा का दर्शन जब करने जांय तब अपनी दृष्टि एकाग्र रखनी चाहिये। परमात्मा का दर्शन करते समय दृष्टि अगल बगल नही रखनी चाहिये। एकाग्र दर्शन द्वारा परमात्मा में आत्मसात करना चाहिये। यही दिव्य दर्शन कहा गया है। लौकिक दर्शन नहीं करना चाहिये। जो लौकिक दर्शन करता है वह धीरे-धीरे दिनप्रतिदिन नीचे उतरने लगता है। "ज्यारे तूं भगवाननी मूर्ति मां एकाग्र थाईश तो तेमांथी तुं सिद्ध दशाने पामीश।" इसके अलावा सारंगपुर ५ के वचनामृत में कहे हैं कि जब कोई भगवान का दर्शन करता है उस समय उसका मन भगवान में इस तरह पिरो देना चाहिये कि मन हटाने पर भी न हटे या दूर जाने पर भी वहीं स्वरुप मन में दिखाई दे।

सकृत्मनःकृष्णापदारविन्दयो निवेशितं
तद्गुणरागि यैरहि।
न ते यमं पाश भृतश्य तद् भक्तान् स्वप्नेऽपि

पश्यन्तिहि चीर्णनिष्कृताः । ( भा.द्र/१/९९ )

श्रीमद् भागवत के षष्ठम स्कन्धमें अजामिलोपाख्यान में कहा गया है कि जो व्यक्ति भगवान का एकवार भी हृदय से दर्शन करता है तो उसके पास यम या यमदूत उसके पास नहीं जाते । कारण यह कि दर्शन मात्र से वह जीव भगवत् परायण हो जाता है । इसी तरह तृतीय स्कन्धके पच्चीसवें अध्याय में कहा गया है कि दर्शन मंत्र के साथ किया जाय तो सबसे उत्तम है । नाम मात्र उच्चारम से मध्यम दर्शन कहा जायेगा । नाम तथा मंत्र रहित प्रणाम कनिष्ठ कहा गया है । इसलिये भगवान के सामने खड़ा होकर स्तुति-कीर्तन-मंत्र इत्यादि का पठन करना चाहिये ।

दर्शन करते समय भगवान के प्रत्येक अंग का दर्शन बारीकी से करना चाहिये, शरीर पर कैसे वस्त्र या आभूषण धारण किये है, इसके साथ ही पुष्पों की माला धारण किये हुये हैं इत्यादि रुपों में भगवान का दिव्य दर्शन करना चाहिये पुरुषोत्तम प्रकाश नामक ग्रन्थ में लिखा है कि श्रीहरि के आयुध, आभूषण, पुष्पमाला, पूजा के पात्र मायिक नहीं है, लेकिन अक्षरधाम के मुक्त पुरुष हैं । वे सभी अलग-अलग भगवान की सेवा में रहते हैं । इसलिये वैष्णवी सेवा रीति में वस्त्र अलंकार, आयुधपूजा पात्र सभी वंदन करने के योग्य है । भगवान बद्रिनाथ के मन्दिर में मंगला आरती के पूजा के समय भगवान जो वस्त्रालंकार धारण करते हैं, उन सभी की प्रथम पूजा आरती की जाती है पश्चात् प्रभु को धारण कराये जाते हैं । पूर्ण दर्शन करके उसी स्वरुप को अपने हृदय में धारण करना चाहिये । जिस तरह धरमपुर की कुशलबाई श्रीहरि का साक्षात् दर्शन करके हृदय में उतारती थी । ( व.सा. २ ) भागवत तृतीय स्कन्धके अड्डावीसवें अध्याय में प्रभु के प्रत्येक अंगो के साथ आयुधो का दर्शन मंगल सूचक बताया गया है । इसके अलांवा किसी भी प्रकार का अभिचार किया गया हो तो भगवान का दर्शन करते ही उस अभिचार का प्रभाव नष्ट हो जायेगा ।

"दर्शन तव लोकस्य सर्वपापहरं परम्" श्रीमद् भागवत के माहात्म्य में कहा गया है कि हे प्रभु आपका दर्शन सभी प्रकार के पापों को नष्ट करने वाला है ।

भगवान का दर्शन करने जांय तो बड़ी सावधानी से जाना चाहिये, अन्यथा अपराधहोने की संभावना रहती है। पुराणों में श्री विग्रह के सामने ३२ प्रकार से अपराधहोने की वात की गयी है । देवदर्शन के लिये जांय तो सावधान होकर जांय । देव द्रोह का यहाँ संक्षिप्त वर्णन करते हैं - सवारी पर बैठकर जाना, पैर में चप्पल-जूता पहनकर दर्शन करने से, जन्माष्टमी, रामनवमी, एकादशी इत्यादि पर्वो में दर्शन न करने से, श्री विग्रह के सामने खड़ा होकर प्रणाम न करने से, स्नान किये बिना दर्शन के लिये जाने से, एक हाथ्र प्रणाम करने से परिक्रमा करते समय भगवान के सामने एक क्षणभी न रुकने से, मूर्ति के सामने पैर फैलाकर बैठने से, पैर मोड़कर उसमें वस्त्र बांधकर बैठने से, मूर्ति के सामने सोने से, मूर्ति के सामने भोजन करने से, झूठ बोलने से, ऊँची आवाज करने से, परस्पर बात करने से, बूमाबूम करने से, झगड़ा करने से, हंसने से, किसी को कष्ट देने से, किसी की निन्दा करने से, अश्लील बोलने से, अधोवायु छोड़ने से, भगवान के सिवाय अन्य को प्रणाम करने से, शक्तिमान होकर भी गौण पूजा करने से, भगवान को अर्पण बिना किये जल-फल-फूल-आहार इत्यादि लेने से, पीठ करके बैठने से, देवनिन्दा करने से, गुरु की या अन्य की अभ्यर्थना या कुशलता पूछने से, अपनी प्रशंसा करने से, देव अपराधहोता है । इन से बचने

( अनुसंधान नं. १० पर

# चोरी न करनी काहु की

- शास्त्री स्वामी अभयप्रकाशदासजी गुरु स्वा. देवप्रकाशदासजी ( नारायणघाट )

सातवा नियम "चोरी न करनी काहु की ....."

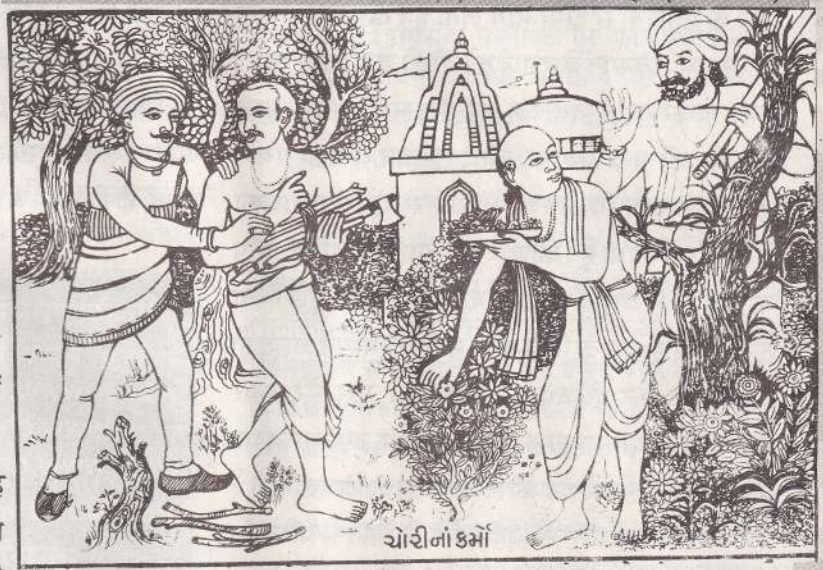
स.गु. प्रेमानंद स्वामीने लिखा है कि "चोरी न करनी काहुं की" । किसी की चोरी नहीं करनी चाहिये चाहे धन चोसी हो, वेतन चोरी हो, दान चोरी हो, या काम चोरी हो इन सभी प्रकार की चोरी से दूर रहना चाहिये । भगवान स्वामिनारायण ने शि.प. के १७ वें श्लोक में लिखा है कि -

स्तेनकर्म न कर्तव्यं
धर्मार्थमपि केनचित् ।
स्वस्वामिकाष्ठपुष्पादि न
ग्राह्यं तदनाज्ञया ॥

धर्म के लिये भी हमारे सत्संगी चोरी न करें, इसके साथ ही अपने स्वामी के लिये काष्ठ-पुष्पादि को भी उनकी आज्ञा विना ग्रहण नहीं करना चाहिये ।

भगवान स्वामिनारायण ने यह भी आज्ञा की है कि स्वार्थ के लिये या धर्म के लिये भी चोरी नहीं करनी चाहिये । इन सभी चोरी से पाप लगता है ।

भगवान स्वामिनारायण के समय में एक सोनी भक्त था । सोना-चांदी का ही उसका व्यापार था । वह भक्त भगवान को एक चांदी की लोटी भेंट में दी । लेकिन महाराज "तन की जाने मन की जाने, जाने चित्त की चोरी" सब कुछ जानते हैं । इसलिये महाराज भक्त से पूछे कि यह लोटी आप दे तो रहें हैं लेकिन इसमें चांदी तो आपकी है न ? उस भक्त को हुआ कि महाराज सब जान गये हैं, इस लिये उसने कहा महाराज ! जो लोग गहना बनाने के लिये लाते हैं, उसमें से थोड़ा थोड़ा बचाकर यह लोटी तैयार हो गयी है । महाराजने कहा तब तो आपने चोरी किया है ऐसा कहा जायेगा । भक्तने कहा महाराज ! मैंने अपने स्वार्थ के लिये चोरी नहीं की है, धर्म के लिये की है । आपको देने के लिये की है । उन लोगों की चांदी आपके काम में आई इसने उनका भी हित ( कल्याण )




होगा ।

लेकिन आप चोरी किये हैं पुण्य के बदले चोरी करने का पाप तो हुआ ही । इसलिये बाद में ऐसा नहीं करना । हम जब मंदिर जाते है, उस समय रास्ते में बगीचा मिले तो आपके मन में होता है कि यहाँ फूल तोड़ते चलते हैं । लेकिन इस तरह का कार्य भले मेरे लिये हो फिर भी मालिक से पूछे बिना कभी नहीं लेना चाहिये । उपलेटा के बेडाभाई बहुत बड़े डाकू थे । चारो तरफ उनके नाम से लेग डरते रहते थे। लेकिन जब से संत मिले तब से

महाराज की पहचान हुई और गधे का स्वभाव छोड़कर गाय जैसे हो गये। एकवार वेराभाई गांव के बाहर से आ रहे थे उस समय किसी के खेत में से बबुल की सुन्दर दतुअन महाराज के लिये तैयार किया, उसी समय उसके मन में महाराज की आज्ञा का स्मरण हो आया कि मालिक की आज्ञा के बिना काष्ठ-पुष्पादि भी नहीं लेना। यहाँ पर मैने महाराज की आज्ञा का लोप किया है यह आभास होते ही दु:ख हुआ। लेकिन अब क्या ? दतुअन तो काट लिया हूँ। यह विचार कर उनके मन में हुआ कि खेत के मालिक से क्षमा मांग लेता हूँ। खेत के मालिक के घर गये। किसान वेराभाई को देखते ही पहचान गया। प्रसन्न होकर कहने लगा कि अरे वेरा भाई आप ? आज मेरी झोपड़ी धन्य हो गयी, हमारा जीवन धन्य हो गया। वेराभाईने कहा कि आज मैं आप से एक अपराधका क्षमा मांगने आया हूँ। कहिये ! वेराभाई ने कहा कि आप के खेत में से बबूल की एक दतुअन आप से पूछे बिना तोड़ लिया हूँ, इस के लिये आप से माफी मांगने आया हूँ। आप मांफ कर दीजिएगा अन्यथा मेरे प्रभु मेरे ऊपर नाराज होजांयेगे। ऐसा वह कह रहे थे कि उसी समय वह किसान उनके पैर में दंड की तरह गिर गया विचार करो ? एक चोर को सत्संग की प्राप्ति होने से कितना परिवर्तन आया कि धर्मकार्य के लिये भी चोरी नहीं करनी चाहिये।

यदि धर्मकार्य के लिये छोटी वस्तु की चोरी का निषेधकिया जाता हो तो, अपनी मौज मस्ती की आवश्यकता की पूर्ति के लिये यदि चोरी की जाय तो उसे क्या कहा जायेगा ..... दैनिक समाचार पत्रों में इस समय प्राय: आता है कि कोई चैन खींचकर भागा या बाइक चोरी करने की गेंग का त्रास बढ गया है। नवरात्रि में तो प्राय: यह समाचार आता रहता था। यह सब क्यो ? सायद खाने को न मिलता हो ? पहनने के कपड़े न मिलते हों ? अथवा ७० हजार की बाईक लेकर रखड़ पट्टी करना होगा, लेकिन ऐसा नहीं सबकुछ के बाद भी मन को संतुष्ट करने के लिये महत्वाकांक्षा के कारण इस धंधे पर लोग चढ जाते हैं। गिरी वस्तु को भी हाथ से लगानी नहीं चाहिये।

संप्रदाय में घेला कोली का प्रसंग सभी को याद है। कच्छ में दुकाल पड़ा उस समय घेला कोली को खाने-पीने की समस्या हो गयी। इसलिये व्यापार के लिये सूरत चल दिये। रास्ते में सोना का आभूषण दिखाई दिया। गरीबी से घिरे हुये थे, खाने-पीने का ठेकाना नहीं था। फिरभी भगवान के सच्चे सत्संगी होने के कारण वह सोना उन्हें धूल जैसे लग रहा था।

किसी का धन हड़प कर या चुराकर अथवा अनीति का धन लेकर सुखी कभी नहीं हो सकता। बल्कि इससे दु:खी ही होता है। जो जैसा करता है वह वैसा भोगता है।


**नीचेके महामंदिरोमें नित्य दर्शन के लिये**

जेतलपुर : www.jetalpurdarshan.com
महेसाणा : www.mahesanadarshan.org
छपैया : www.chhapaiya.com
टोरडा : www.gopallalji.com


**अपने आगामी उत्सव**

मार्गशीर्ष शुक्ल-५ : शुक्रवार दि. १०-१२-२०१० श्री स्वामिनारायण मंदिर गांधीनगर ( सेक्टर-२ ) का पाटोत्सव।

मार्गशीर्ष शुक्ल-६ : शनिवार दि. ११-१२-२०१० श्री स्वामिनारायण मंदिर हिंमतनगर का पाटोत्सव

दि. १७ दिसम्बर से १४ जनवरी-२०११ पवित्र धनुर्मास धून महोत्सव अहमदाबाद श्री स्वामिनारायण मंदिर तथा आधीनस्थ शिखरी मंदिर तथा हरिमंदिर में मनाया जायेगा।

# दिन-दिन दीवाली

## (प्रतिदिन दिपावली)

- साधु घनश्यामप्रकाशदासजी - जमीयतपुरा ( महंत माणसा )

दीवाली आई क्या - क्या लायी ? आनंद-उल्लास तथा नवजीवन का अरमानलाई । भक्तों के लिये भक्ति सुख का अन्नकूट राजभोग लायी । ऐसी एक दीवाली भगवान स्वामिनारायणने कारियाणी में किया था । संत भक्तों के हृदय में आनंद की लहर उठ रही थी । कारण यह कि इस कार्यक्रम में स्वयं हरिवर उपस्थित थे । सुन्दर दीपक जलाकर पंक्ति में सजाके गये थे, जिस की जगमगाहट से वातावरण रम्य बन गया था । बीच में एक मंच बनाया गया था, जिस पर श्रीहरि विराजमान थे । उन्हें भी नाना विधश्रृंगार से अलंकृत किया गया था । मस्तक पर सुनहरी पगड़ी पहने हुये थे । आसमानी रंग का फेटा बांधे हुये थे । पीत पुष्प की माला धारण किये हुये थे। इस दिव्य रुप का दर्शन करके भक्त आनन्दित हो रहे थे । जीवन में सभी बहुत सारी दीवाली मनाये थे लेकिन आज की दीवाली तो प्रभु के साथ मनाकर धन्यता का अनुभव कर रहे थे ।

उसी समय दीव टापू के हरिभक्त पधारे । उन के साथ आई हुई महिलाये प्रभु के लिये स्वर्ण से मढी हुई चादर लाई थी । महाराज के पूजन-अर्चन आगन्तुक भक्त करना चाहते थे, महाराज स्वयं आगे आकर उन लोगों की पूजा-अर्चन स्वीकार करके तथा भेंट सौगाद स्वीकार करके सिंहासन पर आकर बैठ गये । छत्र-पादुका सभी नूतन धारण किये हुये थे । आज तक इस तरह बहुत सारे लोग वस्त्राभूषण तथा अन्य भेंट दिये होंगे लेकिन प्रभु धारण नहीं किये, आज इतने प्रेम से धारण कर रहे हैं । कितने भाग्यशाली हैं आगन्तुक भक्त । यह सुनकर दिव टापू से आये हरिभक्त आनंदित हो गये । उनकी दीवाली अच्छी गयी । इस तरह सभी संत हरिभक्त अपने पास जो भी था वह श्रीहरि को न्यौछावर कर दिये । सभी के साथ प्रभु ने उत्साह के साथ दीवाली मनाने लगे। भक्त तथा भगवान में आकाश पाताल का अन्तर है ।

हुआ ऐसा कि उसी समय दीनानाथ भट्ट पधारे । दीनानाथ ब्राह्मण को आया देखकर श्रीहरिने अपने पास जो भी आभूषण तथा अन्य भेंट सौगाद आई थी सभी उन्हें देदिये । किसी को यह भाव ( मत्सरता का भाव ) नहीं आया कि जो भेंट श्रीहरि के लिये लाये थे वह ब्राह्मण को दान देदिये, बल्कि वे धन्यता का अनुभव करने लगे । इस प्रसंग पर श्रीमद् भागवत में व्यासजी ने लिखा है कि निर्मत्सर संत ही भागवत धर्म के अधिकारी हैं । इसलिये सत्संगी के लिये यह आवश्यक है, मत्सर दूर न हो सके तो प्रयास तो अवश्य करना चाहिये । ऐसा स्वयं श्रीहरि ने अपने मुख से कहकर अपने स्वरुप को समझाने का प्रायस करने लगे । भवान का स्वरुप कितना निर्दोष होता है, वह अपने मुख से कह रहे हैं । दीवाली कितनी आयी और गयी लेकिन आज की दीवाली अमरत्व को प्राप्त करली । सभी को विशेष

प्रकार का ज्ञान देते हुये कहने लगे -

"अमारे तो काम, क्रोध, लोभ, मान, मत्सर, ईर्ष्या ये सर्वोनो क्यारेय हैया मां लेश पण आवतो नथी अने शब्द, स्पर्श, रुप, रस, गंधएजे पंच विषय तेनो तो हैया मां अतिशय अभाव वर्ते छे पण एकेयने विशे लेशमात्र भाव थतो नथी । जेटलुं कांईक अन्त, वन्न आदिकनुं ग्रहण करता होईशुं ते तो भक्त नी भक्ति ने देखी ने करता होईशुं पण पोताना देहना सुख ने अर्थे नो जणाय ने पोताने अर्थे जणाय तो मे तेनो तत्काल त्याग करी दइए अने अमे तो देह राखिये छीए ते पण सत्संगीने अर्थेज राखीये छीए पण बीजो कोई देह राख्यानो अर्थ नथी ने अमे तो आकाश सरखा निर्लेप छीए अने अमे मन, कर्म वचने परमेश्वर ना भक्त छे तेने अर्थे अमारे देह पण श्रीकृष्णार्पण करी राख्यो छे ने ते विना तो चौद लोकनी संपत्ति ने त्रणखला जेवी छे.....

स्वरुप दर्शन की यह उत्तम वात-गूढ रहस्यात्मक ढंग समझाने का प्रयास महाराजने किया है । जब कि भगवान को समझने के बाद ही सम्पूर्ण शरणागति कही जा सकती है। सच्चा सहारा, सर्वोत्कृष्ट निश्चय श्रीहरि के प्रति जब हो गायेगा तब अपने आप दृढता पूर्वक प्रीति का झरना अपने आप बहने लगेगा । बस, यह समझ जिसमें आ गई उसके जीवन में दिन-दिन अर्थात् प्रतिदिन दीवाली है।

( पेज नं. ६ से आगे )

## दर्शनम्

की उपाय आपको सोचना है। भागवत के छठे स्कन्द के नारायण कवच में लिखा है कि हे हयग्रीव भगवान देव-अपराधसे रक्षा कीजिये।

दर्शन करना भी एक प्रकार का स्पर्श है, इसलिये विना स्नान किये दर्शन नहीं करना चाहिये। कितने लोग विना स्नान किये मंगला की आरती का दर्शन करने आते हैं, उसका फल तो मिलता ही नहीं बल्कि अपराधहोता है।

मंदिर में अखंड दीपक को प्रणाम करना चाहिये। मंदिर भगवान का स्थूल स्वरुप है। इसमें अलग-अलग स्थानों पर भक्तों मुक्तों, देवों का निवास बताया गया है। इसलिये सम्पूर्ण देवालय दर्शनीय है । मूर्ति का दर्शन करके वापस जाते समय भगवान की तरफ पीठ करके नहीं निकलना चाहिये।

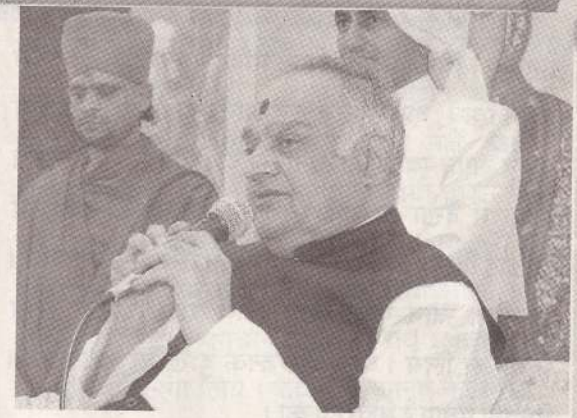
शिक्षापत्री के २३ वें श्लोक में श्रीहरि का वचन है कि रास्ते में जाते समय देव मंदिर आवे तो आदर पूर्वक दर्शन करके प्रणाम करना चाहिये। ४० वें श्लोक में कहा गया है कि उत्सव ( पर्व ) के समय मंदिर में आये हुये सत्संगी या प्रतिदिन आने वाले सत्संगी स्त्री का स्पर्श न करें। स्त्री भी पुरुष का स्पर्श न करें।

बाहर निकलते समय प्रभु के दर्शन का ही चिन्तन करते निकलना चाहिये। सम्पूर्ण दिन भर उसी स्वरुप का स्मरण बना रहे दूसरे दिन जब तक दर्शन करने न जांय तब तक वही स्वरुप मन में स्थिर रखना चाहिये। इसी को यथार्थ दर्शन कहा जायेगा। ऐसा दर्शन जिसके जीवन में है वही उसी के जन्म जन्मान्तर के पाप नष्ट होते हैं।

श्रीहरि के षोडशोपचार महापूजा विधिमें लिखा है कि - "गतंपापंगतं दुःखं गतं द्रारिद्रयेमव आगतसुखसंपत्ति पुण्योऽहं तवदर्शनात्॥"

# आज कलियुग में भी चमत्कार

- शा. धर्मकिशोरदास ( एल.ए. स्वामिनारायण मंदिर )



भगवान स्वामिनारायण इस कलियुग में बहुत सारे लोगों को चमत्कार दिखाये हैं । इससे कितने लोग अनभिज्ञ हैं।

केलिफोर्निया के लोस एंजलेस में आई.एस.एस.ओ. द्वारा संस्थापित श्री स्वामिनारायण मंदिर है। करीब दश वर्ष पूर्व श्री नरनारायणदेव पीठाधिपति प.पू.ध.धु. १००८ श्री तेजेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री के शुभ वरद् हाथो से राधाकृष्णदेव हरिकृष्ण महाराज की मूर्ति प्रतिष्ठित हुई थी । जिस में हजारो हरिभक्त एवं संत उपस्थित थे । एक चमत्कारिक प्रसंग हुआ । हरिकृष्ण महाराज की प्रतिष्ठा के समय पूज्य महाराजश्री का उत्तरीयवस्त्र महाराजने पकड़ लिया। जिसे हजारो भक्तों ने प्रत्यक्ष देखा था । सभी को यह अनुभव हुआ था कि महाराज तो प्रत्यक्ष हैं ही लेकिन महाराज द्वारा प्रतिष्ठित गादी पर विराजमान महाराजश्री में भी वे प्रत्यक्ष रुप से विराजमान है । अभी वर्तमान में एक चमत्कार और हुआ। जिसका प्रत्यक्ष दर्शन अमेरिकन युवति को हुआ।

एक अमेरिकन युवति अपने मित्रों के साथ मंदिर में आई थी उसे प्रभु को दर्शन करने की इच्छा हुई और वह दर्शन करके नीचे उतरी तो मंदिर के भक्त ने उसे महाराज का फोटो तथा अंग्रेजीवाली शिक्षापत्री भेंट में दी । उसे वह घर ले गयी । कुछ समय बाद उसे कोई बिमारी आई, उस बिमारी का इलाज करते हुये डॉक्टर परेशान हो चुके थे । वह घर में अकेले रोया करती थी । उसी समय वह अपने मन में भगवान को याद की और एकाएक उसकी दृष्टि शिक्षापत्री पर पड़ी । पूरी रात उसने शिक्षापत्री वांच डाली । इससे उसे शांति मिलने लगी । बाद में भगवान में उसकी कुछ आस्था बनी और हुआ यह कि महाराज स्वयं आकर उसे दर्शन देकर कहे कि तूं चिन्ता मत कर ठीक हो जायेगी । तूं हमारे मंदिर में दर्शन करने आना । इससे तुम्हारा सभी दुःख दूर होजायेगा । अब दर्शन के लिये वह लालायित हो उठी । लेकिन मंदिर कहाँ है उसे पता नही था । नेट पर श्री स्वामिनारायण मंदिर का पता लगाकर सायंकाल मंदिर आयी । भगवान का दर्शन करते ही वह बोल उठी कि जिस रुप का हमने स्वप्न में दर्शन किया है वही रुप इस मूर्ति का है । उसी समय वह स्वामिनारायण की भक्ता हो गयी । अब वह प्रतिदिन मंदिर दर्शन करने के लिये आने लगी । उसकी बिमारी दूर हो गयी।

एक पंजाबी परिवार बगल के सनातन मंदिर में जाता था लेकिन हमारे मंदिर में नहीं आता था । वह परिवार मानसिक तथा आर्थिक रुप से परेशान था । कितने पंडितो ज्योतिषियों को बताया लेकिन कोई फर्क नहीं पड़ा । संयोग वश उनकी छोटी बेटी नंदिनी को भगवान का कुछ चमत्कार हुआ, इससे वह अपने माता-

पिता को बिनती करके अपने मंदिर में ले आई। वे सभी दर्शन किये, दर्शन करते उन्हें आनंद हुआ। एक रात्रि में प्रभुने अपने स्वरुपका तीनो को दर्शन दिया। जो स्वरुप मंदिर में देखा था वहीं स्वरुप उन तीनों को स्वप्न में दिखाई दिया। अब वे सभी भगवान के आश्रित हो गये। नियमित स्नान-पूजा-पाठ, नित्य दर्शन का वे सभी नियम ले लिये। धीरे-धीरे उनके दुःख दूर होने लगा। कितना प्रताप है महाराज का।

एक दक्षिण भारत का परिवार अमेरिका के सानडियोगा में रहता है। वे लोग एक बार अपने मंदिरकी तरफ से होकर निकल रहे थे। मंदिर में दर्शन करने के लिये आये, रात्रि शयन आरती के बाद मंदिर बन्द होने का समय था। लेकिन जब दर्शन कर रहे थे तो उसमें से छोटी बेटी भगवान की मूर्ति को देखकर तन्मय हो गयी पांच मिनिट के बाद तो रोने लगी और जोर जोर से "माधव मुकुन्द हे गोपाला मोरली मनोहर नंदलाला" बोलते-बोलते नृत्य करने लगी। भगवान में भाव विभोर होकर ऐसा लगता था कि उन्हे पकड़ने के लिये दौड़ पड़ेगी। वह बालिका मात्र ६ वर्ष की थी। लेकिन उसके माता-पिता कहते थे कि यह जिद करके स्वामिनारायण मंदिर लाई है, जो कभी देखा सुना नहीं था, फिर भी उसके अन्तःकरण की प्रेरणा यहाँ ले आयी है। इतनी छोटी उम्र में यह भगवान मय हो गयी है। इसी लिये कि आचार्य महाराज द्वारा प्रतिष्ठित मूर्तियों का ऐसा प्रताप ही होता है। भक्तों को चाहिये कि इस दिव्य प्रभावशाली मूर्ति को छोड़कर अन्यत्र न जांये, उनका इसी में कल्याण है। मूल मंदिर की मूर्तियों में ही यह चमत्कार देखने में मिलता है। अन्यत्र नहीं। भगवान स्वामिनारायण प्रत्यक्ष विराजमान रहे हैं। सभी भक्तों के मनोरथ को पूर्ण भी करते हैं। प.पू. आचार्य महाराजश्री तथा प.पू. बड़े महाराजश्री की कृपा से यहाँ पर सत्संग प्रवृति सुन्दर चलती है।

( पेज नं. १६ से आगे )

## संस्कृत तथा व्रजभाषा के समर्थ काव्य सम्राट आचार्य महाराजश्री देवेन्द्रप्रसादजी पांडे कविवर (कूट)

उपयोग किया गया है। इससे भी अधिक वेदना व्यक्त करते इसे लिखते हैं।

विरसत नहि छनबार, रोवत जागत सपन में।
प्रियजन विसरे प्यार, जीवन मिथ्या जोगिया॥

सर्वगुण सम्पन्न एक ऐसे आचार्य जो श्रीजी महाराज की आज्ञा का सम्पूर्ण पालन करने वाले तथा सत्संग से अभ्युदयार्थ कार्यरत रहने वाले पूज्य महाराजश्री देवेन्द्रप्रसादजी को काशी के पंडित सभा में "धर्ममार्तण्ड" की उपाधिसे बहुमानित किया था। संमान पत्र में लिखा था कि आपश्री स्वामिनारायण संप्रदाय की धर्ममर्यादाओं के रक्षण में विचक्षण हैं। आपकी कीर्ति दिगदिगन्त तक व्याप्त है। इसलिये आपकी प्रतिष्ठा से प्रभावित होकर काशी की पंडित सभा ने "धर्ममार्तण्ड" ( धर्म का सूर्य ) अर्थात् धर्म का पालन करने वाले, आश्रितजनों के अज्ञान को दूर करने में सूर्य के समान आपको इस सम्मान से आपको विभूषित करती है। आप सदाचार से विभूषित सरल चित्तवाले तथा सुविनीत हैं। वे निसर्ग के प्रति अपार स्नेह रखते थे। साहित्य, संगीत, कला, प्रवास, नेतागिरी, दरभंगा के भूकंप इत्यादि पर आपकी बहुत सारी कृतियां हैं।

# कार्तिक शुक्ल-११ अर्थात् धर्म को स्मरण करने का दिन

- गोरधनभाई वी. सीतापरा ( हीरावाडी-बापुनगर )

अपने इष्टदेव भगवान स्वामिनारायण के पिता धर्मदेव विक्रम संवत् १७९६ कार्तिक शुक्ल पक्ष एकादशी के दिन उत्तर कोशल में मेहदाव नामक नगर में उत्पन्न हुए थे। धर्मदेव के पिता का नाम बालशर्मा तथा माता का नाम भाग्यवती था। पिता बाल शर्मा सदाचार तथा विद्या के विषय में ख्यातनाम थे। जितेन्द्रिय एवं ब्रह्मा के अंश से उद्भूत थे। धर्मकुल का सावर्णि गोत्र सामवेद की कौथुमी शाखा, भार्गववैतहव्य - सावेतस इस तरह उनके तीन प्रवर थे। धर्मदेव जन्म समय से ही देवतुल्य, मन्दहास्य से युक्त मुखवाले, नवीन मेघ की तरह शरीर वाले, आजानबाहु, कमल के समान नेत्रवाले, देव की तरह कांति वाले होने से पिता ने देव शर्मा नाम रख दिया। परंतु स्वयं धर्मप्रजापति थे इसलिये लोग उन्हे धर्मदेव के नाम से जानने लगे।

श्रीहरि चरित्र में श्रीहरि के पिता धर्मदेव साक्षात् धर्म के अवतार थे ऐसा निश्चय कराने वाला एक प्रसंग आता है। धर्मदेव का विवाह भक्तिमाता के साथ हुआ। इन पवित्र दंपत्ति को तीन पुत्र हुये। बड़े रामप्रतापभाई, बीच के घनश्याम महाराज, छोटे इच्छारामभाई थे। बड़े भाई की पत्नी का नाम सुवासिनी बाई था। इनके पुत्र हुये अयोध्याप्रसादजी, जो अमहदाबाद गादी के आदि आचार्य हुये। वे अपने भतीजे रामशरण को छपैया की विशाल सभा में श्रीहरि का दिव्य बालचरित्र सुनाते हैं। उस समय धर्मदेव का चरित्र सुनाते समय कहते हैं कि इस चरित्र का जो ग्रहण करता है उसके हजारों जन्म के पाप नष्ट हो जाते हैं। एकवार स्वयं धर्मदेव श्रीहरि के जन्म स्थानक ऐसे कूयें पर उत्तराभिमुख स्नान कर रहे थे, उसी समय सुवासिनी भाभी धोती देने गई। उस समय उनके मन में ऐसा विचार आया कि हमारे ससुर को सभी लोग धर्मदेव कहते है। यद्यपि धर्मदेव को तो शास्त्र में चार मुख, चार हाथ, चार पैर, आठ नेत्र बताया गया है। लेकिन हमारे ससुर में तो यह सब दिखाई नही देता है। ऐसा विचार करके वहाँ धोती देकर खड़ी रहीं। धर्मदेव उनकी मानसिकता को श्रीहरि की इच्छा से समझ गये और अपने मूल स्वरुप में दिखाई देने लगे। चार हाथ, चार मुख, चार पग, आठनेत्र - जिसमें क्रम से एक हाथ में धर्मशास्त्र का गुटका, दूसरे हाथ में कनक की छड़ी, तथा अन्य दो हाथ जोड़कर अपने पुत्र भगवान के रुप में वासुदेव की स्तुति कर रहे हैं। ऐसा दिव्य स्वरुप देखकर सुवासिनी के मन की शंका चली गयी और पास जाकर चरण में नतमस्तक होकर प्रार्थना करने लगीं। उस समय धर्मदेव कहने लगे कि हम दोनो धर्म तथा भक्ति हैं। घनश्यामभाई तो साक्षात् अक्षराधिपति पुरुषोत्तम नारायण हैं। हम सभी मनुष्य की तरह आप सभी को दिखाई देते हैं। यह आप सभी के सुख के लिये है। ऐसा समझना। ऐसा कहकर पूर्ववत् स्थिति में हो गये। सुवासिनी भाभी यह वृत्तान्त भक्तिमाता, सुन्दरीबाई इत्यादि से कह सुनाई।

कहने का मतलब यह है कि श्रीहरि के पिता साक्षात् धर्मदेव है। वे सच्चरित्रवान् तथा शास्त्रो के चिन्तनवाले थे। धर्मदेव स्वयं गुरु रामानंद स्वामी से "श्री कृष्णस्त्वंगर्तिर्मम" इस मंत्र की दीक्षा प्राप्त करके अन्यों

को स्वयं मंत्र दीक्षा देते तथा सदुपदेश भी करते थे। इसके अलांवा स्त्रियों को मंत्रोपदेश भक्तिदेवी से करवाते थे। स्वयं श्रीहरिने भी मनुष्य के रुप में धर्मदेव से वेद वेदांगादि शास्त्रो का अध्ययन किया था। धर्मदेवने श्रीहरि को सामान्य वैष्णवी दीक्षा (श्रीकृष्ण स्त्वं गतिर्मम दिये थे जो आज भी उसी परंपरा का निर्वाह होता है। श्रीकृष्ण ये तीन अक्षरवाला मंत्र भी दिये थे।

चारो वर्ण तथा चारो आश्रमों के लिये उपयोगी ऐसे नियम बताये थे। गृहस्थ आश्रम में गृहस्थ अपनी पत्नी का भी ऋतुकाल में संग करें तथा त्यागी अष्टप्रकार से स्त्री संग का त्याग करें। अनुचित वस्तु का अलोभ, देह इन्द्रिय का दमन, जीव प्राणीमात्र पर दया, आत्मापरमात्मा सम्बन्धिज्ञान, दूसरे का द्रोह न हो ऐसा सत्य, दंभ से रहित, सहन शक्ति, धैर्य, प्राणीमात्र का मन से भी द्रोह न करना। इस तरह का सनातन धर्म वेद में वर्णित है। जब यह धर्म भगवान नारायण के साथ जुड़ेगा तभी एकांतिक धर्म कहा जायेगा। एकांतिक धर्म का आश्रय करके वासुदेव भगवान की भजन करते हुये उन्हीं के धाम को प्राप्त कर सकता है। अन्य जो भी है प्रभु का आश्रय छोड़कर अन्यत्र श्रम करते हैं वे स्वर्गादि के फल को प्राप्त करते हैं।

सत्संगिजीवन प्र. २ में श्रीहरि कहते हैं कि धर्म रहित जो भी धर्म हो उससे चाहे कितना भी लाभ हो उसका परित्याग करना चाहिये। जिस कर्म की प्रशंसा शास्त्र करते हो वही धर्म समझना चाहिये। जिस की निन्दा करते हैं उन्हें अधर्म समझना चाहिये। विद्या, लक्ष्मी, शरीर की सुन्दरता, शौर्य, उत्तमकुल में जन्म, रोग रहित, संसार कष्ट से उद्धार ये सभी धर्म से उत्पन्न होते हैं। शब्द, स्पर्श, रुप, रस, गन्धइत्यादि जो भी भोग मिलता है वह धर्म का फल है। जो धार्मिक व्यक्ति शरीर का त्याग करता है वह स्वर्ग प्राप्त करता है। जिस तरह जलचर प्राणी जलाशय को स्वयं प्राप्त करते हैं उसी तरह शुभ कर्म करने वाले को सभी प्रकार के सुखस्वतः प्राप्त होते हैं। एकधर्म ही ऐसा मित्र है जो मनुष्य के मरने के बाद भी उसके साथ जाता है। मनुष्य का जीवन चंचल जल के समान है कब नष्ट हो जायेगा पता नहीं, इसलिये सावधान होकर धर्म करना चाहिये। प्रगट प्रभु का वचन पालन ही धर्म है। भावार्थ यह कि श्री स्वामिनारायण भगवान की आज्ञा का पालन ही श्रेष्ठ धर्म है। धर्मदेव ही धर्म के मूल है, इसलिये श्रीहरि अपने माता पिता धर्म तथा भक्ति को प्रत्येक मंदिरो में प्रतिष्ठित किये हैं। धर्मकुल अर्थात् धर्मदेव से सम्बन्धित उन्हीं के वंश में उत्पन्न कुल समझना चाहिये। नहीं कि धर्मपालन करने वाले का कुल।

नूतन वर्ष में श्रीहरि के चरण कमल में यही प्रार्थना कि हे महाराज ? आप अपनी माता-पिता के साथ सदा मेरे हृदय में विराजमान रहना। हमारे जीवन में उत्तरोतर धर्म-भक्ति की वृद्धि होती रहे ऐसा आशीर्वाद दीजियेगा।

### नये व्रत उत्सव का निर्णय में परिवर्तन भेजने के संबंध में

श्री नरनारायणदेव देश के अहमदाबाद, मूली तथा भुज मंदिर के आधीन अपने मंदिरो के गत वर्ष के व्रत उत्सव के निर्णय में पाटोत्सव तिथि या फोन नंबर में परिवर्तन हो तो अगले निर्णय में परिवर्तन हेतु "श्री स्वामिनारायण मासिक कार्यालय" श्री स्वामिनारायण मंदिर कालुपुर के नाम से जल्द भेजे।

# संस्कृत तथा व्रजभाषा के समर्थ काव्य सम्राट आचार्य महाराजश्री देवेन्द्रप्रसादजी पांडे कविवर (कूट)

- प्रो. सूर्यकान्त भट्ट ( भुज-कच्छ )

श्री नरनारायणदेव पीठ श्री स्वामिनारायण ग्रंथमाला का चतुर्थ पुष्प प.पू. आचार्य महाराजश्री देवेन्द्रप्रसादजी पांडे कविवर "कूट" कृत "कूट काव्यलोक" प.पू. बड़े महाराजश्री ने हमें दिया । वह कृपा प्रसाद इसलिये है कि धर्मवंश की तथा आचार्यपद की गरिमा रुप महाराजश्री देवेन्द्रप्रसादजी महाराज के अनेकों काव्यों का दर्शन होगा । इसके साथ मानवजीवन के अनेक क्षेत्र का ज्ञान, आराधना, उपासना तथा कर्तव्य परायणता का भी दर्शन होता रहेगा । इस कूट काव्यलोक के संपादक उच्च साहित्य विदो डॉ. घनानंद शर्मा "जदली" आचार्य रघुनाथ भट्ट, डॉ. रघुवीर चौधरी तथा डॉ. वाचस्पति मिश्र हैं । प्रकाशकीय निवेदन में साहित्य परिषद अहमदाबाद के अध्यक्ष डॉ. अम्बाशंकर नागर ने प.पू. बड़े महाराजश्री तेजेन्द्रप्रसादजी का ऐसा स्तुत्य काव्य प्रकाशित करने की अनुमति देने पर आभार व्यक्त किया है।



पू. बड़े महाराजश्री तेजेन्द्रप्रसादजी कूट काव्यालोक में उद्‌बोधन में लिखते है कि बापूजी की रचनाये कोई काल्पनिक नहीं है, बल्कि सत्यता को प्रगट करने का पूर्ण प्रयास किया है । उस समय उन्होंने जो देखा उसका यथार्थ निरुपण अपने काव्यों मे किया है । बापूजी की कविताओं में समाजोत्थान, देश की परिस्थिति, सत्संग समाज प्रेमाणुता, करुणता तथा जीवन की यथार्थता चरितार्थ दिखाई देती है । वे एकांतिक तथा आत्मचिन्तन के स्वभावाले थे । भविष्य में भावुक लोग इस काव्य कृतिके उपर प्रगतिवाद तथा प्रयोगवाद के सिद्धान्तो पर समन्वयात्मक संशोधन करेंगे । इससे हिन्दी साहित्य का विकास-प्रकाश हो सकेगा।

सृष्टि का सौन्दर्य कविता को बताया गया है । कविता की उत्पत्ति आत्मस्फुरणा में से होती है । ऐसी स्फुरणा दैव कृपा से होती है । कूट काव्यलोक में पू. आचार्य महाराजश्री देवेन्द्रप्रसादजी की ई.स. १९४५ से १९६५ तक २० वर्ष तक की रचना है । विलक्षण प्रतिभा के धनी, जन्मजात कवि, श्री नरनारायणदेव गादी के पांचवे आचार्य, स्वकर्तव्य परायणता में सदा सतर्क रहते थे । जब तक आचार्य पद पर रहे तब तक अपनी कर्तव्य निष्ठा में परायण रहते थे । वे अत्यन्त संवेदनशील, भक्तिभावपूर्ण, श्रद्धावान, उत्सव प्रिय प्रकृतिवाले थे ।

उनका प्रकृति प्रेम अजोड़ था । उनकी कृतियों में श्री गणेश स्तवन, शारदास्तवन, नरनारायण स्तवन, श्री कृष्णाष्टक, शिवस्मरण इत्यादि काव्य श्रद्धा के घोतक हैं।

पुस्तक के प्रारंभ में प्रभु ने गुणगान करने वाली पंक्ति यहाँ प्रस्तुत हैं -

स्वामिनारायण शरम हर नर संकट हरन ।
स्मरन करन मंगल सदा धन्य धर्मधुर धारन ॥

पूज्य देवेन्द्रप्रसादजीने अपना उपनाम "कूट" रखा था । वैसे तो कूट का अर्थ पर्वत होता है - जैसे चित्रकूट । चित्रकूट का अर्थ विशेष स्थितिका परिचायक है । यह शब्द मूढोक्ति को प्रदर्शित करता है । गूढोक्ति को सरलता से नहीं समझा जा सकता । ऐसे काव्य बुद्धि की कसौटी के विषय हैं । संस्कृत भाषा के प्रति उनका विशेष लगाव था । इस भाषा के प्रति लोग आकृष्ट हों इसके लिये संस्कृत पाठशाला की स्थापना किये थे । पू. देवेन्द्रप्रसादजीने भी उच्च कक्षा तक संस्कृत का अभ्यास किया था । इनका यज्ञोपवित संस्कार संवत् १९८६ में आठ वर्ष की उम्र में हुआ था । बाद में वे संस्कृत, अंग्रेजी, व्रजभाषा प्राकृत, संगीतकला, अश्वकला इत्यादि का खूब अध्ययन करके पारंगतता प्राप्त की थी । पादपूर्ति तथा काव्य लेखन में एवं छंदाभ्यास में अपने विद्या गुरु श्री दुर्गानाथ झा एवं श्री गिरिजाशंकर शास्त्री को माना है । चारणी साहित्य में भी उनकी रुची थी । गुरु वन्दना में उन्होंने लिखा है कि -

वंदन गुरुजन को विमल, दवदय शुद्धि के हेत ।
पारसमनि के परसते, लोहकनक पन लेत ॥

गुरुपूर्णिमा के शुभ अवसर पर महाराजश्रीने लिखा है कि जीवन में सच्चे पथप्रदर्शक तो गुरु ही होते हैं । इसीलिये तो अज्ञानरुपी अंधकार तथा दुःख का नाथ गुरु कर सकते हैं । श्री स्वामिनारायण भगवान के अष्टनंद संत कवियों ने व्रजभाषा में कितने ही काव्यों को लिखा है । वाणी के असंयम के कारण ही रामायण-महाभारत में नुकशान की स्थिति देखने में आती है । इसलिये वाणी पर संयम आवश्यक है । वाणी का दुरुपयोग की अपेक्षा मौन रहना श्रेष्ठ है । इसीलिये महाराजश्रीने संस्कृत में लिखा है कि -

वाणी संयमनो चिता विस्ततानुचितोच्चार्याः निःसृता ।
धन्या भो वनजन्मवो भुवितये वाणी विहीना यतः ॥

श्रीमती राजेन्द्रकुमारी लाली राजाने अपने पिताश्री देवेन्द्रप्रसादजी के विषय में लिखा है कि वे तो एक वत्सल पिता था । मेरा सम्बन्धउनके साथ मित्र के जैसा था । वे मितभाषी होते हुये भी हास्य विनोदी स्वभाव के थे । थोड़े शब्दों में वे बहुत कुछ कह जाते थे । कविवर स्वयं मातृभक्त तथा पितृभक्त थे । एक समय बद्रीधाम की यात्रा में अपनी माता की शिबिका ( डोली ) स्वयं उठाकर यात्रा करवाये थे । एकबार उनके मामा विमार पड़ गये तो उनकी रक्षा के लिये श्रीहरि हर की प्रार्थना करने लगे । उसकी पंक्ति अधोनिर्दिष्टहै -

मामा को मंगल करो, दर्द को द्रुत दूर ।
शास्त्रकार्य में शस्त्र पै, हरिहर रहो हजूर ॥

पूज्य महाराजश्री पुत्र वत्सल पिता थे । उनके छोटे पुत्र चि. योगेन्द्रप्रसादजी का अक्षरवास मात्र दो वर्ष की उम्र में ता. २६-२-१९५५ शिवरात्री के दिन हुआ । इससे वे अत्यन्त दुःखी हो गये । बहुत शोकातुर होकर पुत्र वियोग में हृदय विदारक पंक्ति लिखे -

कैसे प्रिय बिन दिन कटै, अंतर कढि कढि आह ।
तन मन भयो तबाह, जनम अकारथ जोगिया ॥

"योगिया" शब्द चि. योगेन्द्रप्रसादजी के लिये

( अनुसंधान नं. १२ पर

# स्वामी नित्यानंद स्वामी का जीवन कवन

- प्रो. महादेव धोरियाणी ( राजकोट )

उत्तर भारत के वुंदेलखंड में लखनऊ जिला है, जिस के दतिया के एक गाँव में विष्णुशर्मा नामक यजुर्वेदी ब्राह्मण रहते थे । उनकी पत्नी का नाम विरजादेवी था । इनके घर में गोविन्द शर्मा तथा दिनमणी शर्मा नामक दो पुत्रों का जन्म हुआ । दिनमणी शर्मा बड़े प्रकांड पंडित हुये ।

पिता विष्णु शर्मा के यहाँ लक्ष्मी-सरस्वती दोनों का वर्चस्व था । अपार समृद्धि तथा धीर-गाम्भीर्य पाण्डित्य के साथ सुशीलता तथा सौन्दर्य ये सभी दिनमणी में था । इनकी आभा समाज में दिन प्रतिदिन बढती जा रही थी । इन्हे संस्कृत-शास्त्राभ्यास की खूब सौख थी । ये काशी में वर्षोतक रहकर तलस्पर्शी अध्ययन किये थे । इन्हे यथार्थ तत्व के शोधकी गजब की तमन्ना थी । शास्त्राभ्यास के बाद घर जाने के बहाने वे तीर्थाटन के लिये निकल पडे । द्वारिका जाते समय विसनगर आये । यहीं पर उन्हें कोई सत्संगीने कहा कि काठियावाड में भगवान का अवतार हुआ है । उनके साथ विशाल शिष्यवृन्द है । वे परमहंस भी खूब विद्वान तथा प्रतापी है । इन अवतार के अवतारी भगवान के अंगोपर भगवान के सभी चिन्ह है । यह सुनकर महाराज से मिलने की उत्कंठा बढ गयी ।

द्वारिका से यात्रा करके "फणेणी" गाँव आये । यहाँ पर सहजानंद स्वामी के शिष्य प्रभुतानंद स्वामी से मिले । उन्हींसे महाराज की महिमा जानकर आनंद विभोर हो गये । अन्तर क्लेश शांत हो गया । चित्त में आनंद होने लगा । अब तो वे और भी महाराज से मिलने के लिये उत्सुक हो गये । उन्हें समाचार मिला कि महाराज सिद्धपुर होकर ऊँझा पधारने वाले हैं ।



दिनमणी शर्मा ऊँझा पहुँच गये । महाराज यहाँ पर तालाब के किनारे बड़ी सभा करके बैठे हुये थे । महाराज के दर्शन होते ही देह भाव को भूल गये । थोड़े समय के बाद दंडवत् प्रणाम किये । महाराज उन्हें सभा में ही गले लगा लिये । महाराज का विलक्षण व्यक्तित्व देखकर तथा उनके भीतर के दैवत्व देखकर शास्त्रों में वर्णित भगवान के लक्षण उनमें है यह दृढ भाव हो गया । दिनमणी वहीं रहने लगे । कुछ समय के बाद दीक्षा लेने की विन्ती करने लगे । मेधपुर में उन्हें दीक्षा देकर उनका नाम नित्यानंद मुनि रखे ।

महाराज ने नित्यानंद स्वामी को आज्ञा किये कि आप यद्यपि विद्वान है फिर भी शास्त्राभ्यास और करें । इसलिये नांदोल के अतिविद्वान पुरुषोत्तम भट्ट के पास

वेदांत न्याय, सांख्यादि शास्त्रों का गहन अध्ययन किया।

स्वामी जब शास्त्राभ्यास कर रहे थे उस समय भट्टजी को ऐसा आभास हुआ कि ये स्वामी जिस तरह रहस्योद्घाटन स्वंय कर लेते हैं तो निश्चित ही कोई अलौकि व्यक्ति हैं। हमे इनसे पढना चाहिये।

एकवार भट्टजी शास्त्रार्थ का आयोजन करके बड़े-बड़े विद्वानों को बुलाये थे। उस समय भट्टजीने स्वामी की खूब प्रशंसा की थी। अन्य विद्वान उनसे अनेकों प्रश्न पूछे जिसमें से कुछ अधोनिर्दिष्ट हैं-

(१) आत्मा ज्ञान स्वभाव वाला है, कारण स्व भावज्ञान, कार्य स्वभावज्ञान उनके नव प्रकार कौन-कौन है?

(२) आत्मा से कौन सा ज्ञान किस जीव को होता है?

(३) कौन सा ज्ञान प्रत्यक्ष है और कौन सा ज्ञान परोक्ष है?

(४) कौन सा ज्ञान मोक्ष का मूल है?

(५) आत्मा को कैसा समझना?

(६) ब्रह्मोपदेश तथा उसका महत्व बताइये?

उपरोक्त ६ प्रश्न सुनकर सभा स्तब्धरह गयी। विद्याभ्यास पूर्ण करके स्वामीजी लोया महाराज के पास चले गये। वहाँ महाराज ने कहा कि आप जो पढे हैं उसे सुनाइये। स्वामीने अथ से इति तक सब सुना दिया। महाराज खूब प्रसन्न हुये। बाद में महाराज स्वामी को अपने पास रखने लगे। स्वामीकी कथा सुनकर सभी मंत्र मुग्धहो जाते थे। "करे कथा नित्यानंद नित्य, राखी ग्रंथो रड़ियामणा।"

महाराज की आज्ञा से मुक्तानंद स्वामी तथा अन्य संतो के साथ रहकर स्वामी अहमदाबाद में संतो को पढाते थे। भीख मांगकर भोजन करते। स्वामी की शरीर सुन्दर सुडौल थी इसलिये दुष्ट लोग उपहांस में कहते कि स्वामी आप तो लड्डु खाकर मोटे हो गये हैं। यह सुनकर स्वामी सरल स्वभाव में कहते अरे भाई इस शरीर में मात्र सूखा अन्त ही गया है, लेकिन श्री स्वामिनारायण के नाम का यह प्रभाव है जो आप देख रहे हो।

महा समर्थ नित्यानंद स्वामी पिता विष्णु की अपार संपत्ति का परित्याग करके महाराज की एकमात्र आज्ञा से संत की दीक्षा लेकर विद्वान हुये और साम्प्रदायिक नीति के प्रशस्त मार्ग पर आरुढ हुये। उन्होंने बहुत सारे संस्कृत के ग्रंथ लिखा। "श्रीहरि दिग्विजय" नामक ग्रन्थ के रुप में बाहर आया।

स्वामीने सत्संग की सेवा में अद्भुत कार्य किया जो औदाहार्य है। अपनी विद्वता से संतो को पढाया ही नहीं बल्कि कथा करके संप्रदाय का गौरव बढाया। स्वामीने संप्रदाय को वेदोक्त तथा शास्त्र संमत प्रमाणित किया। पुष्टि संप्रदाय की ऐसी मान्यता थी कि श्री स्वामिनारायण संप्रदाय एक पंथ है। परंतु वल्लभ संप्रदाय के विद्वानों के साथ शास्त्रार्थ करके प्रमाणित किया कि स्वामिनारायण संप्रदाय एक श्रेष्ठ संप्रदाय है। इसी तरह जूनागढ के नवाब को भी स्वामी ने संप्रदाय की गौरवता, सम्प्रदाय की विशिष्टता समझाकर आश्चर्य चकित कर दिया था।

इस तरह अनेकों प्रसंग नित्यानंद स्वामी के जीवन में देखने को मिलता है। लेकिन विशद लेक होने की शंका से उसका उल्लेख यहाँ नहीं करते हैं। यहाँ केवल इतना निर्देश करना है कि दिनमणी शर्मा एक ऐसा सम्पत्ति शाली पिता की संतान थे तथा स्वयं प्रखांड विद्वान थे फिर भी अवतारों के अवतारी भगवान स्वामिनारायण को पूर्ण ब्रह्म के रुप पहचान जाने से उनकी दासता स्वीकार लिये और संप्रदाय की यावत् जीवन सेवा करते रहे। ऐसे स्वामी के चरणों में कोटि कोटि वंदन।

# रंग महोल के श्री घ़नश्याम महाराज का १२५ वाँ पाटोत्सव मनाया गया

- राजन भावसार ( विसनगर )



भगवान श्री स्वामिनारायण ने अपनी श्री हरिकृष्ण नामक मूर्ति अहमदाबाद में श्री भक्तिमाता - श्री धर्मदेव के साथ तथा वडताल में श्री राधा श्रीकृष्ण के साथ तथा जेतलपुर में श्री रेवतीजी श्री बलदेवजी के साथ स्थापित की है । इसके अलांवा भगवान श्री स्वामिनारायणने अपने अनादि ऐसे "श्री वासुदेव" नामक मूर्ति के साथ श्री भक्ति माता श्री धर्मपिता के साथ वडताल में स्थापित की है। इस तरह स्वयं भगवान स्वामिनारायणने अपनी मूर्ति को "श्री हरिकृष्ण" तथा "श्री वासुदेव" के नाम से प्रतिष्ठित किया है । श्री नरनारायणदेव पीठ आचार्य की परंपरा में सर्वप्रथम आदि आचार्यश्री अयोध्याप्रसादजी महाराजने भगवान श्री स्वामिनारायणकी मूर्ति "श्री घनश्याम महाराज" के नाम से छपैया मंदिर में मध्यपीठ में श्री भक्तिमाता धर्म पिता के साथ स्थापित की है। बाद में श्री नरनारायणदेव पीठ के आचार्य परंपरा में भगवान श्री स्वामिनारायण की मूर्ति को किसी अन्य मूर्ति के विना "श्री घनश्याम महाराज" के नाम से आचार्य श्री केशवप्रसादजी महाराजने वि.सं. १९४२ कार्तिक शुक्ल-१२ को अहमदाबाद मंदिर रंगमहोल में प्रतिष्ठित किया था। बाद में श्री वासुदेवजी महाराज ने "श्री घनश्याम महाराज की अकेली मूर्ति वि.स. १९४२ वसंत पंचमी को मूली मंदिर के सभा मंडप में प्रतिष्ठित किया था। बाद में उन्हों ने ही वि.स. १९६३ ज्येष्ठ शुक्ल-२ को "श्री घनश्याम महाराज" की अकेली मूर्ति प्रांतिज मंदिर में तथा वि.स. १९६९ वैशाख कृष्ण-३ को "श्री घनश्याम महाराज" की अकेली मूर्ति माणसा मंदिर में तथा छपैया में भगवान श्री स्वामिनारायण के जन्म स्थाम में अक्षर

भुवन बनवाकर वि.स. १९७५ चैत्र शुक्ल-९ को "श्री घनश्याम महाराज" की मूर्ति को प्रतिष्ठित किया था।

कितने संत-हरिभक्त-भगवान श्री स्वामिनारायण की मूर्ति को उनके भक्तों के साथ क्यों प्रतिष्ठित नहीं किया जाता ऐसी शंका करते हैं। परंतु भगवान श्री स्वामिनारायण ने शिक्षापत्री के १११ वें श्लोक में लिखा है कि भगवान श्री कृष्ण कभी राधादिक भक्तों के साथ होते हैं, अथवा राधाजी उनके अंग में होती है या कभी भगवान श्री कृष्ण अकेले होते है। इस श्लोक का हार्द समझाते हुये शतानंद मुनि "अर्थदीपिका" में लिखते हैं कि "राधादिक का साहचर्य दृश्य-अदृश्य दोनों ही बताया गया है" बगल में रहने वाली राधादिक भक्त कभी श्रीकृष्ण के साथ में तो कभी अंग भूत रहती हैं। सभी को दोनो स्वरुप का दर्शन हो यह भाव है तथा कभी श्रीकृष्ण के हृदय में अतिस्नेह के कारण रहने से अदृश्य भाव होने पर श्री कृष्ण का एकाकी दर्शन का भाव दृष्टि गोचर होता है। परंतु राधादिक का दर्शन साथ में न होने पर श्रीकृष्ण मात्र जानना चाहिये। इस तरह भगवान स्वामिनारायण के सिद्धान्तानुसार जब भगवान अकेले हों तो मूर्ति को अकेली नहीं माननी चाहिये। वे जब अकेले होते हैं तब अनंत कोटि मुक्तों के साथ अदृश्य रुप से रहते हैं।

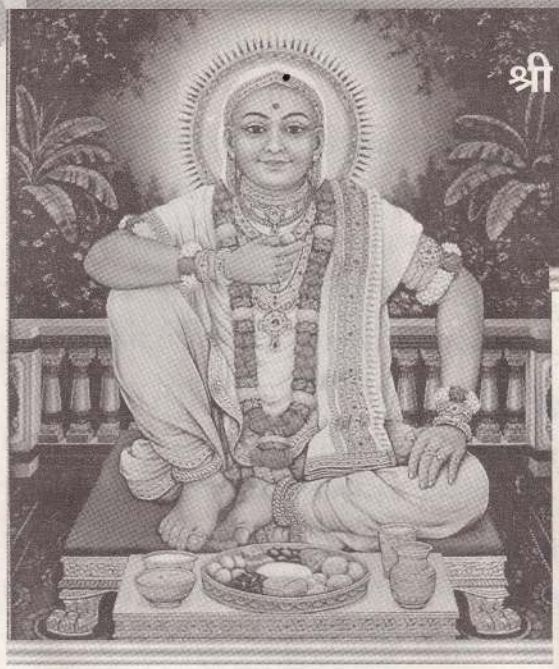
भगवान श्री स्वामिनारायण ने इसी सिद्धांत को ध्यान में रखकर श्री स्वामिनारायण मंदिर जूनागढ में भक्त रहित अपने अवतार श्री रणछोड़रायजी ( श्रीकृष्ण ) तथा श्री त्रिकमराय ( श्री वामनजी ) की मूर्ति को मध्य पीठ पर प्रतिष्ठित किया था। इसीतरह वडताल मंदिर में आदि आचार्यश्री रघुवीरप्रसादजी महाराज से श्री लभ्मीनारायण देव के बगल में श्री रणछोडरायजीकी मूर्ति को अकेले प्रतिष्ठित करवाया था। इस तरह भगवान की मूर्ति उनके भक्त के विना भी स्थापित की जा सकती है। जिस मंदिर में भगवान की मूर्ति उनके भक्त के विना हो तो भी उन्हें अकेले नहीं समझना चाहिये। उस मूर्ति के साथ परोक्ष रुप में अनंत भक्त हैं ऐसा समझना चाहिये। भारत में अनेकों मंदिर है जैसे तिरुपति बालाजी, श्रीनाथजी, डाकोरजी, द्वारकाजी, पंढरपुर इत्यादि अनेकों मंदिर में भगवान की मूर्ति उनके भक्तविना प्रतिष्ठित है।

इस तरह जहाँ पर भगवान श्री स्वामिनारायण की मूर्ति अकेली प्रतिष्ठित हो तो उन्हें अकेले नहीं समझना चाहिये, उनके साथ अक्षरधाम के अनंत मुक्त मुक्तानंद आदिक साधु, मुकुन्दानंदादिक ब्रह्मचारी, मयारामादिक गृहस्थ भक्त सदा अदृश्यरुप से साथ ही रहते हैं।

## लेखको को सूचना

यदि आप श्री स्वामिनारायण मासिक के लिए लेख भेजते वक्त इतना ध्यान में रख लेख भेजे।

- लेख में शब्द कोष के मुताबिक शुद्ध लिखना
- संप्रदाय के सिद्धांत मर्यादा के मुताबिक और किसी का चुराया हुआ या अन्य स्थान पर प्रसिद्ध या प्रकाशित लेख मत भेजिये। यदि गलती से छपा तो संपूर्ण जिम्मेदारी लेखक की रहेगी।
- लेख के अक्षर सुवाच्य होने चाहिए।
- अंग्रेजी या संस्कृत श्लोक शुद्ध तथा पढ़ाई में आये ऐसा लिखना तथा अर्थ के साथ लिखना।
- लेख छोटा तथा क्रमिक होना चाहिये।



# श्री सहजानंद स्वामीने भुज में अति उमंग उल्लास के साथ दीपोत्सव तथा अन्नकूट उत्सव किया था

- प्रो. सूर्यकान्त भट्ट ( भुज-कच्छ )

हमारे त्योहार भारतीय संस्कृति के अलंकार रुप है। श्री सहजानंद स्वामीने अपने अवतारी लीलाकाल में उत्सवों को अत्यंत प्रोत्साहित किया है । उत्सव ही सामाजिक जीवन की आत्मा है । दिपावली को सभी पर्वो के राजा का स्थान दिया गया है। दिपावली का अर्थ प्रकाश का महापर्व है। जहाँ प्रकाश होता है वहाँ अंधकार का कोई स्थान नहीं होता। मानव जीवन में यह पर्व आत्म शुद्धि का इसीलिये माना जाता है क्योंकि दीपक ही ज्ञान का प्रतीक है।

आज से २०४ वर्ष पहले एक समय आश्विन महीने में श्री सहजानंद स्वामी जेठी गंगारामभाई के घर विराजमान थे। वहाँ कच्छ से तथा सोरठ से हरिभक्तगण उनके दर्शन हेतु पधारे थे । उस समय गंगाराम जेठीने श्रीजी महाराज की बिनती करते हुए दोनो हाथों को जोड़कर कहा कि, "हे महाराज ! अब थोड़े ही दिनों में दिवाली आ रही है। आपश्री तो सर्वावतारी है। आपश्री भुज में दीपावली तथा अन्नकूट का उत्सव मनाकर हरिभक्तों के मनोरथ को पूर्ण करने की कृपा करिए। तब कृपावश सहजानंद स्वामीने उमंग में कहा कि, "उत्तम है, हम दिपावली तथा अन्नकूट उत्सव सभी भक्तों के साथ यहीं करेंगे।"

दूसरी तरफ शिवराम महेता, हरजीवन महेता तथा लाधी बाईने भी श्रीजी हमाराज से अन्नकूटोत्सव को धूमधाम से मनाने की बिन्ती की। पर्व को धूमधाम से मनाने के लिए श्रीजी महाराजने कच्छ में गुजरात सौराष्ट्र में झालावाड, हालार आदि स्थानों पर निमंत्रण पत्रिकाओं को भेजा।

निमंत्रण पत्रिका में ऐसा लिखवाया कि जो.....

१०८ श्री स्वामी श्री सहजानंदजी महाराज की तरफ से सभी भाईओं तथा बाइओं को हमारा जय स्वामिनारायण; विशेष यह है कि संवत १८६२ के कार्तिक शुक्लपक्ष-१ के दिन भुजनगर में विशेष अन्नकूट का आयोजन है इस हेतु आप सभी भाई-बाई आबाल-वृद्ध मिलकर उत्सव में पधारिये।"

दिपावली के दिन सहजानंद स्वामीने मुक्तो के साथ भुज के हमीरसर में स्नान क्रिया की। उसके बाद स्वच्छ सुंदर वस्त्रों को धारण किया। दूसरी तरफ हरिभक्तों तथा मुनिगण तैयार हुए। शिवराय महेता सुंदर साज-शिंगार करके श्रीजी महाराज के लिए हरड़ि घोड़ी लेकर आये

घोड़ी पर बिराजमान होने के लिए महाराज से प्रार्थना की। उसी समय ढोलक, बेंडबाजा की धून शुरु हो गई। भजन मंडली भजन ललकारने लगी। इस प्रकार शोभायात्रा भुज में घूमी और निवास स्थान पर महाराज को भक्तगण धूमधाम से लाये।

लाधीबा अन्नकूट के उत्सव का भाव जानकर श्रीहरि हेतु भुजनगर वासियों से उत्सव में सेवा करने की प्रेरणा दी। सभी ने विचार किया कि भगवान की प्रत्यक्ष सेवा का लाभ मिले उस समय अनाज या चीनी पीसने की ऐसी आधुनिक सेवाएँ नहीं थी तो लोगों ने अनाज साफ करने की, मसाला पीसने की, सफाई करने की, पानी कूएँ में से बर्तनो में भरने की सेवा तथा निवास की सेवा का स्वेच्छीक भार स्वीकार्य किया।

अन्नकूट का प्रसाद बनाने के लिए दो पाकशाळाओं को तैयार किया गया। जिसकी व्यवस्था जेठी गंगाराम, जेठी बालजी, जेठी खीमजी, जेठी मूलजी तथा लोहाणा उका, सेजपाल, वल्लभजी, भगवानजी, रामदास सुथार, सुंदरजीभाई, हीरजीभाई तथा बाईओ में लाधीबाई, गोमतीबहन, मूलीबहन, जेठीबहन, सुरजबा, बहेरखीबा आदिने की थी। प्रागजी पुराणी तथा सुथार हीरजीभाई राजीराला की व्यवस्था को संभाल रहे थे। भट्ट महीदास, भट्ट विश्वेश्वर, भट्ट कामेश्वर देव इश्वरलाल, गोर हरिराम, गोर भवानीदास आदि ब्राह्मणो ने विविध पक्वान्न बनाये थे।

श्री सहजानंद स्वामी की निश्रा में दिवाली अन्नकूट महोत्सव के निमंत्रण को अपना अहोभाग्य समझकर देशांतर से भक्तगण भुज आने लगे। प्रथम पावर पट्टी के हरिभक्त आये उसके बाद में बली, वागड़, अंजार चोवीसी, भुवड़ चोवीसी, हालार चोवीशी तथा देशांतर भ्रमण करने वाले मुनि मंडलभी आने लगे। श्रीजी महाराजने प्रागजी पुराणी तथा लाधीबा को भी अपने आगमन के विषय में जानकरी दी कि, "आप सभी तैयार रहना हम अन्नकूट के दर्शन करने आ रहे हैं।"

मूलजी ब्रह्मचारी तथा मुनिमंडल के साथ श्रीजी महाराज पाकशाला में पधारे। तब आश्चर्यकारक घटनाएं होने लगी। महाराज के दो स्वरुप हो गये। एक स्वरुप में पार्षदों के साथ बहनों की पाकशाला में पधारे तो उसी समय भाईओं भी पाकशाला में बाल मुकुंदजी - की मूर्ति सिंहासन पर अन्नकूट को स्थापित किया। यहाँ भाईओं को लगा कि महाराज सौ प्रथम अभी पाकशाला में पधारे हैं। परंतु श्रीहरिने बालमुकुंद की मूर्ति के समक्ष अन्नकूट का भोग लगाया और उस मूर्ति को अपनी मूर्ति में लीन किया। उस समय विविधसंप्रदाय के हरिभक्तों को अपने इष्टदेव राम, कृष्ण आदि के दर्शन हुए। इस प्रकार यह समस्त स्वरुप सहजानंद स्वामी में दृश्यमान होते ही यथार्थ हो गया की सहजानंद स्वामी ही अवतारों के अन्नतारी है।

इस प्रकार श्री स्वामिनारायण भगवान ने मुख में दिपावली तथा अन्नकूट का उत्सव धूमधाम से मनाया था।

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री १००८ श्री कोशलेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री के ३८ वें प्रागट्योत्सव के उपलक्ष्य में साबरकांठा के अकरुंद (ता. बायड) गाँव के श्री नरनारायणदेव युवक मंडल के सक्रिय सभ्य प.भ. चंद्रेशकुमार जे. पटेल श्री स्वामिनारायण मासिक के ३८ वंशपरंपरागत सदस्य बनाये है। उन्हे खूब धन्यवाद (जे. के. स्वामी)

# प.पू. आचार्य महाराजश्री का ईडर शहर में ३८ वाँ प्रागट्योत्सव



– शा. हरिजीवनदास ( हिंमतनगर )

साबरकांठा के ईडर शहर में श्री गोपीनाथजी हरिकृष्ण महाराज के चरणों में प.पू.ध.धु. आचार्य १००८ श्री कोशलेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री का ३८ वाँ प्रागट्योत्सव धूमधाम से मनाया गया था।

ईडर मंदिर के महंत स्वा. जगदीशप्रसाददासजी तथा स्वा. रघुवीरचरणदासजी, स्वा. कृष्णप्रसाददासजी, को. सत्यसंकल्पदास, स्वा. हरिजीवनदासजी, स्वा. वासुदेवचरणदासजी, स्वा. श्रीजीप्रकाशदासजी इत्यादि संत करीब एक वर्ष से उत्सव की तैयारी में लग गये थे। जन्मोत्सव को अच्छी तरह मनाने के लिये साबरकांठा तथा ईडर देश के सत्संगी तन, मन, धन से लग गये थे।

जन्मोत्सव का अंगभूत गाँवो में प्रभात फेरी ३८ महापूजा, वृक्षारोपण, व्यसन मुक्ति रैली इत्यादि का आयोजन किया गया था। रक्तदान शिबिर के आयोजन के साथ ३८ गाँवो से पदयात्रा का आयोजन भी किया गया था।

इन सभी प्रवृत्तियों के साथ ३८ वें जन्मोत्सव का शुभ अवसर आही गया। ईडर महंत स्वामी की प्रेरणा से सभी तैयारी हुई थी।

विजया दशमी के प्रातः काल प.पू. आचार्य महाराजश्री ईडर पधारे थे। उन्हीं के हाथों देवों को षोडशोपचार पूजन के साथ अभिषेक किया गया था। हजारों संत हरिभक्त दर्शन का लाभ लिये थे। बाद में ३८ घंटे के महामंत्र के धून की पूर्णाहुति की गयी थी। छप्पन भोग-अन्नकूट की आरती पूज्य महाराजश्री के हाथों सम्पन्न हुई थी। अनोखे ढंग से ट्रेक्टर को अलंकृत करके पू. महाराजश्री को तथा संतो को बैठाकर बैन्ड पार्टी के साथ शोभायात्रा निकाली गयी थी। सम्पूर्ण ईडर शहर में श्री स्वामिनारायण का डंका बजाया गया था। यात्रा श्रीजी बायोसीडस, लालोडा रोड तक आयी। वहीं पर सभा का

आयोजन किया गया था।

करीबर १५ हजार हरिभक्त तथा २०० संत उपस्थित थे। वैदिक विधिसे जन्मोत्सव मनाया गया। जन्मोत्सव के आयोजक जगदीश स्वामीने प्रथम हार पहना कर पू. महाराजश्री का आशीर्वाद लिया था। शा. स्वा. हरिप्रकाशदासजी (गांधीनगर) महंत शा. हरिकृष्णदासजी (कालुपुर), शा. स्वा. घनश्यामजीवनदासजी (लालोडा) तथा अन्य संत एवं कमेटी के सदस्य पू. महाराजश्री के जन्मोत्सव मनाने में लगे रहे। सभी ने ३८ दीपक जलाकर आरती उतारी थी। पू. महाराजश्री ने केक काटकर सभी को प्रसन्न कर दिया। पू. पी.पी. स्वामी (जेतलपुर) ने सभी को बताया कि ईडर के महंत स्वामी महाराज के प्रसादी का चरणारविन्द पू. बड़े महाराजश्री को म्युझियम के लिये भेंट दे रहे हैं। यह सुनकर महाराजश्री को बड़ा आनंद हुआ था।

इस प्रसंग के मुख्य यजमान, सहयजमान तथा छोटे-बड़े सभी हरिभक्त पू. महाराजश्री का पूजन-अर्चन करके आशीर्वाद प्राप्त किये थे। हरिभक्त तथा ईडर के मुस्लिम समुदाय ने पू. महाराजश्री का ३८ फुट फूल का हार बनाकर पहराया था। इस अवसर पर गांधीनगर से शा. हरिकेशवदासजी तथा अहमदाबाद, जेतलपुर, मूली, छपैया, सिद्धपुर, गांधीनगर इत्यादि धामों से संत पधारे हुए थे। साबरकांठा के सत्संगी २ करोड मन्त्र लेखन, मंत्र जाप, प्रभात फेरी, वचनामृत पारायण, महापूजा इत्यादि जन्मोत्सव के निमित किये गये थे।

हिंमतनगर के महंत स्वामी हरिजीवनदासजीने उपरोक्त विधिको अर्पण किया था। इडर मंदिर के को. सत्यसंकल्प स्वामी तथा सभा संचालन वासुदेव स्वामी पू. महाराजश्री को हार पहनाकर आशीर्वाद प्राप्त किया था। संत समाज की तरफ से जगदीश स्वामी को बहुमान किया गया था।

इस प्रसंग पर संप्रदाय के भावी आचार्य प.पू. लालजी महाराजश्री ने सभा में जन्मोत्सव के निमित्त अपने पिताजी से आशीर्वाद मांगा था। पू. बड़े महाराजश्रीने यह बताया कि इन सभी उत्सव में जब कि जन्मोत्सव या यज्ञोपवित या धर्मकुल का व्यक्तिगत कोई उत्सव हो उसमें व्यक्तिपूजा की भावना नहीं रहती है। परंतु इस प्रसंग पर विशेष पूजा हो सत्संग में जागृति आवे इस हेतु से यह उत्सव मनाया जाता है। प.पू. महाराजश्री ने सभी उपस्थित संत हरिभक्तों को आशीर्वाद दिया था। बहनो की गुरु प.पू. गादीवालाजी तथा प.पू. बडी गादीवालाजी इस प्रसंग पर बहनो को आशीर्वाद देने के लिये पधारी थी।

इस प्रसंग पर प.पू. आचार्य महाराजश्री के हाथों दर्शन डी.वी.डी. तथा उत्तमानंद स्वामी विरचित प्रश्नोत्तर प्रदीप तथा बाल संस्कार नामक पुस्तकों का विमोचन किया गया था। उत्सव में लालोडा तथा मणीयोर गाँव के सत्संगी भोजनालय की व्यवस्था संभाले थे। शोभायात्रा की सेवा सापावाडा के हरिभक्त तथा सभामंडप स्टेज की सेवा हिंमतनगर, इलोल गाँव के भक्तों ने की थी। प.पू. महाराजश्री तथा समस्त धर्मकुल एवं संतो के रहने - खाने की सम्पूर्ण व्यवस्था नेत्रामणी की तरफ से की गयी थी। महापूजा-अन्नकूट उमेदगढ द्वारा, पार्किंग की सेवा आबलवाड, पदयात्रियों की सेवा अरोडा द्वारा की गयी थी। इसके अलांवा सांचोदर - साबरकांठा के सत्संगियो ने तो खड़े पैर सेवा कार्य किया था। इस प्रसंग पर सम्पूर्ण पानी पीने की व्यवस्था डुंगरी गाँव द्वारा की गयी थी।

# प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री का ओस्ट्रेलिया धर्म प्रवास

- शा. स्वामी रामकृष्णदास ( कोटेश्वर गुरुकुल )

अनंत कोटि ब्रह्मांड के अधिपति भगवान श्री स्वामिनारायण सर्व कारण के कारण स्वतंत्र होते हुये भी भक्त के प्रेम में आकर परतंत्र हो जाते हैं। जो भक्त अपने मन के भावों को छोड़कर भगवान की इच्छा के अनुसार करता है उसके पास भगवान स्वयं आ जाते हैं और उसकी सर्वविधइच्छा पूर्ण करते हैं। भगवान श्रीहरि की परंपरा में उनके वंश में भी यह भाव प्रत्यक्ष देखने में मिलता है। अपने जीवन निर्वाह के लिये अथवा अध्ययन के लिये ओस्ट्रेलिया में गये हुये हरिभक्तों के विशेष आग्रह पर प.पू. आचार्य महाराजश्री संत मंडल के साथ सत्संग करने हेतु तथा भक्तों को दर्शन का लाभ देने के लिये २१-१०-२०१० से २-११-२०१० तक ओस्ट्रेलिया के धर्म प्रवास पर गये हुये थे।

सर्व प्रथम ता. २०-१०-२०१० को पर्थ पधारे। उस समय रात्रि का समय था फिर भी बड़ी संख्या में हरिभक्त महाराजश्री के स्वागतार्थ एरपोर्ट पर उपस्थित थे। इतना सुन्दर उत्सव जैसा वातावरण उस एरपोर्ट पर देख कर पू. महाराजश्री बहुत प्रसन्न हुये। बाद में वहीं से प्रेमजीभाई खेताजी के घर जाकर निवास किये। ३ दिन तक पूज्य महाराजश्री सभी सत्संगियो के घर दर्शन-आशीर्वाद देने के लिये पधारे। प्रतिदिन सायंकाल होल में सभा होती तब महाराजश्री भक्तों को दर्शन देते। यु.के. आफ्रिका से आये हुये भक्त तथा विद्यार्थियों ने पू. महाराजश्री का मन जीत लिया। पर्थ में अपने मंदिर की जगह खरीद ली गयी है। उस जगह को देखने महाराजश्री पधारे थे। प्रमुख श्री रवजीभाई तथा समग्र ट्रस्टी मंडल पू. महाराजश्री से प्रार्थना किये कि मंदिर का निर्माण कार्य जल्दी हो ऐसा आशिर्वाद दीजिये। पू. महाराजश्री सभी हरिभक्तों को तथा विद्यार्थियों को अपने सानिध्य का सुख देकर आशीर्वाद दिये कि आप सभी सत्संग के नियम में रहियेगा, सत्संग अपना एक परिवार है। पू. महाराजश्री वहां से ब्रिसबन पधारे।

प.पू. महाराजश्री वहाँ से गादी पर आशीन हुये उसके बाद प्रथमवार ब्रिसबन पधारे थे। ब्रिसबन में मूल भारतीय थे लेकिन वर्षो पूर्व फीजी होकर अथवा अन्यत्र से व्यापार के लिये या अभ्यास के लिये ओस्ट्रेलिया में आकर बसे हुये हैं। सत्संग समुदाय संख्या के दृष्टि से अत्यन्त अल्प है फिर भी भक्तों की भावना को ध्यान में रखकर पू. महाराजश्री १६ वर्ष पूर्व जब लालजी महाराज थे आज गादीपर आरुढ होने के बाद पधारे थे। भास्करभाई, जगदीशभाई, जीतेनभाई, मूलजीभाई, इत्यादि के परिवार में आनंद की सीमा न रही। दो दिन तक इनके घरों में सत्संग सभा हुई थी। ब्रिसबन से गोल्ड कोस्ट में एक सभा का आयोजन किया गया था, जहाँ पर पू. महाराजश्री पधारे थे। सीडनी से तथा पर्थ से ब्रिसबन-सभी भक्त पू. महाराजश्री के दर्शनार्थ पधारे थे। तीन दिन तक भक्तों को सत्संग का सुख देकर पू. महाराजश्री बेलबोर्न पधारे थे।

बेलबोर्न के भक्त पू. महाराजश्री का दर्शन करके धन्यभागी हो गये। एरपोर्ट से प.पू. महाराजश्री-दीपकभाई राधवानी के घर पधारे थे। ४ दिन तक वहीं पर रुक कर सभी को आनन्द देते रहे। प्रतिदिन सायंकाल मंदिर की सभा में सभी को दर्शन का सुख देते रहे। युवकों की विन्ती पर १ दिन की लीप आइलेन्ड के प्रवास का भी आयोजन हुआ। प.पू. महाराजश्री के सानिध्य में हरपल कुछ न कुछ सीखने को मिला। इस वात का अनुभव सभी युवानों को हुआ। मंदिर के आंगन में पू. महाराजश्री के हाथों वृक्षारोपण का आयोजन किया गया था। प्रत्येक दिन सायंकाल सभा में प.पू. आचार्य महाराजश्री तथा संतोने दिव्य वाणी का लाभ

दिया था । एक दिन रासोत्सव का आयोजन किया गया था । रात्रि में सभी भक्त महाराज के साथ भोजन का प्रसाद लिये । पू. महाराजश्री के सानिध्य में अनेकों दिन क्षण में वीत गया ऐसा आभास हो रहा था । सभी ने सत्संग पीयूष का पान करके जीवन को कृतकृत्य माना । मंदिर की त्वरित पूर्णता हेतु आशीर्वाद देकर वहाँ से पू. महाराजश्री एलीलेड पधारे ।

एडीलेड का सत्संग बहुत कम होते हुये भी उमंग, उत्साह तथा आनंद से परिपूर्ण था। धूमधाम के साथ स्वागत किया गया था । दो दिन तक वहाँ रुक कर सत्संग सभा में भक्तों द्वारा पूछे गये प्रश्नो का उत्तर पू. महाराजश्री बड़ी सरलता से किये थे । दूसरे दिन का वातावरण ऐसा लग रहा था कि वचनामृत का उपदेश स्वयं श्रीहरि दे रहे हों । भक्तों को कथा का तथा भजन भक्ति का आनंद देकर भारत वापस आ गये ।

सीडनी, ब्रिसबेन, पर्थ तथा एडीलेड में दूसरे गाँव के भक्त भी सत्संग का लाभ लेने पधारे थे । इस सम्पूर्ण प्रवास में पू. महारजश्री के साथ अहमदाबाद से संतमंडल में पी.पी. स्वामी ( नारायणघाट महंतश्री ) श्रीराम स्वामी ( कोटेश्वर ) तथा पार्षद वनराज भगत थे । पर्थ से श्री विश्रामभाई भी सतत १२ दिन तक पू. महाराजश्री के साथ रहकर सत्संग का लाभ लिये थे ।

श्री नरनारायणदेव की कृपा से अपना मूल संप्रदाय का सत्संग विश्वव्यापी बने ऐसी प्रभु के चरणों में प्रार्थना ।

## डांगरवाकी तजनबा के वंशजो ने श्री स्वामिनारायण म्युझियम के लिये प्रसादी की वस्तुओं को भेंट दी

दंढाव्य देश के डांगरवा गाँव की पू. जतनबा का नाम सत्संग में खूब प्रतिष्ठित है । वे महाराज को अपना इष्ट ही नहीं मानती थी बल्कि उनकी आज्ञा में अपना जीवन न्यौछावर कर दी थी । इसीलिये उनके अन्तभंडार में से भयंकर दुकाल पड़ने पर अन्त घटता नहीं था । आज भी उनके वंशजों में वैसा ही भाव है । रंचमात्र भी फर्क नहीं है । इन लोगों के पास जो भी श्रीहरि के प्रसादी की वस्तु है प.पू. बड़े महाराजश्री को श्री स्वामिनारायण म्युझियम के लिये समर्पण कर दिये हैं । धन्य है ऐसे जतनबा के वंशजो को ।

## अमेरिकन स्कोलरोने २ लाख का दान दिया

श्री स्वामिनारायण म्युझियम को जो भी देखने आता है वह देखकर प्रभावित हो जाता है । हरिभक्तो के लिये तो सरल है लेकिन विदेशियों के लिये मन में प्रेरणा मिले तथा दर्शन की स्फुरणा हो जाय यह सामान्य बात नहीं है । अभी वोबाश कोलेज इन्डिया - अमेरिका के २० जितने रिचर्स स्कोलर एक हप्ते के लिये मेहमान बने थे । ये सभी श्री स्वामिनारायण बाग मेमनगर में प.पू. आचार्य महाराजश्री के निवास स्थान पर तथा प.भ. दशरथभाई पटेल ( सदस्य ), श्री रतिभाई पटेल ( सदस्य ) श्री रसिकभाई पटेल ( मोखासणवाला, श्री विठ्ठलभाई पटेल तथा श्री धर्मेन्द्रभाई पटेल के यहाँ रुके थे । ये सभी प.पू. बड़े महाराजश्री का दर्शन करके इतना प्रभावित हुये थे कि अपने गुजरात के सभी दर्शनीय धार्मिक स्थलों का निरीक्षण करके रिसर्च किये थे । इन सभी में अपना अहमदाबाद का श्री स्वामिनारायण मंदिर मूल गादी संस्थान से काफी प्रभावित हुये थे । इसके अलांवा वे श्री स्वामिनारायण म्युझियम से भी उतना ही प्रभावित हुये थे । विदा होने के समय सभी ने प.पू. बड़े महाराजश्री का तथा प.पू. आचार्य महाराजश्री का खूब आभार माना था । प्रेम के वशीभूत होकर म्युझियम के लिये सभी ने मिलकर २ लाख रुपये दिये । इतने रुपये देते हुये अपने जीवन को वे धन्य समझ रहे थे ।

## प.पू.ध.धु. १००८ श्री बड़े महाराजश्री के सानिध्य में

# बद्रिनारायण - केदारनाथ यात्रा

- प्रहलादभाई पटेल ( करजीसण )

यात्रा करने से जीवन में शान्ति मिलती है। भगवान के दिव्य चरित्रो का दर्शन होता है। इसके साथ ही तीर्थ स्थळों के दर्शन में भगवान की प्रत्यक्ष अनुभूति होती है। पुल्हाश्रम, छपैया जैसे स्थलो पर भगवान का प्रत्यक्ष अनुभव होता है। इसके अलांवा दिव्य पुरुष के साथ यात्रा करने से प्रभु के प्रत्यक्षत्व भाव का दर्शन होता है।

बद्रीनारायण-केदारनाथ भूमि को देव भूमि कहा जाता है। वहाँ आज भी भगवान का प्रत्यक्ष वास है। प.पू. बड़े महाराजश्री संत-हरिभक्तों को साथ लेकर ५ अक्टूबर-२०१० को बद्रीनारायण देव के पाटोत्सव के उपलक्ष्य में पधारे थे।

५ अक्टूबर २०१० को प्रातःकाल प.पू. बड़े महाराजश्री कालुपुर मंदिर के महंत शा. हरिकृष्णदासजी, अन्य संत तथा देश के एवं अमेरिका के हरिभक्तो को साथ लेकर किंगफिशर फ्लाईट से देहरादून पहुंचे । वहाँ से वाहन द्वारा अपने श्री स्वामिनारायण मंदिर हरिद्वार पहुँचे। मंदिर में निवास करके सायंकाल-गंगाजी की आरती करने के लिये हरिकी पैढी पधारे।

दूसरे दिन गंगा स्नान करके सायंकाल प्रस्थान किये और केदानारनाथजी की तलहटी हिमालय रिसोर्ट में पहुँचकर आराम किये। प्रातः हिमालय हेली सर्विस द्वारा सेरसी हेली पेड से हेलीकोप्टर्स द्वारा केदारनाथ शिवलिंग का दर्शन करने पधारे। सुंदर पूजा विधिकरके वहाँ से प्रस्थान किये। केदानारनाथजी की यात्रा बहुत कठिन है।

प्रातः प्रयाण करके गुप्तकाशी सनड्राइव मोटेल पहुँचे। मार्ग में छोटे-बड़े ऊपर से पत्थर गिर रहे थे। वहाँ थोड़े समय तक रुकना पड़ा था। लेकिन पू. महाराजश्री निर्विघ्न निकल गये थे। अन्य हरिभक्त उसमें फंस गये फिर भी किसी तरह वहां से निकलकर सनड्राईव होटेल पहुंचे।

दूसरे दिन प्रयाण करके बद्रिनारायण मंदिर पहुंच गये । प.पू. अ.सौ. बड़ी गादीवालाजी की तरफ से आयोजित श्रीमद् सत्संगिजीवन पंचाह्न पारायण स.गु. शा. स्वा. निर्गुणदासजी के मुख से सुनने का अवसर मिला था। सायंकाल पुज्य बड़े महाराजश्री के साथ बद्रीविशाल के दर्शन का लाभ मिला। दूसरे दिन व्यास गुफा, गणेश गुफा, सरस्वती नदी, भीमशीला, वसुधारा, मुचकुंदगुफा, चरण पादुका, नीलकंठ पर्वत, अलकनंदा नदी, तप्तकुंरु, गसण शीला तथा नारद शीला का दर्शन किये।

दूसरे दिन प्रातः काल बद्रिनारायण भगवान के पाटोत्सव का दर्शन, अन्नकूट दर्शन, संतवाणी का लाभ पू. बड़े महाराजश्री का आशीर्वाद, तथा महाप्रसाद ( भोजन ) का लाभ मिला । कितने हरिभक्त बद्रिनारायण के नूतन मंदिर के निर्माणकार्य हेतु भेंट सौगात दिये। वहाँ के मंहत शा. गोलोकविहारीदासजी ने पाटोत्सव के समय सुन्दर व्यवस्था की थी।

दूसरे दिन वापस आते समय हनुमान चट्टी, ( जहाँ पर भीम को हनुमानजी की पूंछ हटाने का प्रयास करने पर भी सफलता नहीं मिली थी ) तथा देव भूमि में अनेक पर्वतों की पर्वतमाला, वनकी शोभा, झरते हुये झरने इत्यादि को देखकर बहुत आनंद हुआ । रास्ते में वहीं पर्वत गिरने की स्थिति थी जिससे मार्गावरोधकुछ समय तक रहा। इस बार खूब तेजगति से गिर रहा था। पत्थर, वृक्ष, शिला इत्यादि ऊपर से खड़ खड़ाते हुये, आवाज करते हुये गिर रहे थे। इस यात्रा में अमेरिका तथा लंडन से आये हुये यात्रिक अपने को धन्य मान रहे थे।

# सत्संग सुरभि

## आप तो आपो आप रवुदा छो

- अतुल भानुप्रसाद पोथीवाला ( मेमनगर-अहमदाबाद )

श्री सहजानंद स्वामीने उस जमाने के मेला को रुपान्तरित करके वसंत पंचमी, हुताशनी, रामनवमी, इत्यादि त्यौहारों को उत्सव का रुप दे दिया । इस अवसर पर जाति-पांति छोड़कर सभी आते । सभी में एकमात्र भक्ति का भाव रहता था । इसी तरह का एक उत्सव गढपुर में हुआ । गाँव-गाँव से भक्त आये, सभी के रहने की अलग-अलग व्यवस्था की गयी । श्रीजी महाराज सभी के निवास पर जाकर सभी का कुशल क्षेम पूछते । आपको कोई कष्ट तो नहीं ? भजन भक्ति हो रही है न ? महाराज ! आप की दया से सब कुछ निर्विघ्न हो रहा है । लेकिन द्वेष बढता जा रहा है । द्वेष कौन करता है ? महाराज ! सूबाजी स्वयं द्वेष करते हैं । विना कारण के जाति से अलग कर देते हैं । आपकी भजन करते हैं वह उनको अच्छा नहीं लगता एकबार तपती हुई गर्मी में बाहर खड़े रखे थे । कब तक बाहर खड़े रखे थे ? महाराज उनकी सगी बहन उदयकुंवरबा को पता चला तो अपने भतीजे बलदेवकुंवरजी के साथ वहाँ आकर मेरे साथ धूप में खड़ी होगयी । सूबा उन्हें रोका तो उन्होंने कहा कि हम स्वामिनारायण के सत्संगी है । दूसरे सत्संगी जिस तरह से रहें उसी तरह हमें भी रहना चाहिये ।

अरे ! ऐसा पक्ष रखा ?

हाँ महाराज ! उनका इस तरह का व्यवहार देखकर उनदोनों के साथ हमें भी छाया में ले आये । आप भी मेरे हैं। इसलिये धूप में नहीं रख सकते । हमें अब विसनगर आना ही पड़ेगा ?"नहीं महाराज ! सूबा कहता है कि यहाँ सहजानंद आवे तो उसे पकड़ के बन्दी बनादेंगे ।

तब तो हमें आना ही पड़ेगा । आप लोग शांति से भजन भक्ति करते रहना चिन्ता मत करना ? इस प्रकार श्रीहरि की वाणी सुनकर सभी को परम शांति मिली । परंतु श्रीजी महाराज को हृदय में यह वात लग गयी । भक्त भगवान की भजन करते हैं और द्वेषी व्यर्थ का द्वेष करते हैं । उत्सव पूर्ण हो गया सभी अपने-अपने स्थान पर गये । उधर महाराज भक्तों की गुहार पर नींद क्यों आये, उसी रात विना माणकी के पैदल विसनगर के लिये प्रस्थान कर दिये । मूलजी ब्रह्मचारी की नींद टूटी तो देखा महाराज अकेले कहीं जा रहे है, वह पीछे हो लिये । श्रीहरिके मना करने पर भी पीछा नहीं छोड़े । उस भयंकर हिमपाती मौसम में महाराज के साथ ब्रह्मचारी भी विसनगर पहुंचे । महाराज ब्रह्मचारी को साथ लिये हुये उदय कुंवरबां के घर पहुंचकर निवास किये । वह भक्ता महाराज को एकाएक आया हुआ देखकर बहुत प्रसन्न हुई, उसके आनंद की सीमा न रही । समग्र विनसनगर के भक्तजन महाराज के दर्शन हेतु उमड़ पड़े ।

महाराज उदयकुंवरबाँ के पुत्र बलदेवकुमार से कहे कि आप अपने मामा को हमारे आने का समाचार दे दीजिये । नहीं महाराज ! वे आपको बन्दी बना देगे । वह कंस मामा है । बलदेव सूबा भगवान से बढकर है क्या ? नहीं महाराज ? जीव कभी भगवान नहीं हो सकता ।

बस सभी भगवान की इच्छा के अनुसार संभव है, जीव चाहे जितना ऊपर-नीचे कर ले ।

बलदेवजी अपने मामा के पास जाकर कहा कि आप वहाँ आ रहे हैं या प्रभु यहाँ आवे । सूबा आगबबूला होकर कहने लगा, उनके साथ कौन है ? वे अकेले हैं । उनके साथ एक ब्रह्मचारी है । यह सुनते ही अपने नौकरो से कहा जाओ सहजानंद आया है उसे पकड़कर यहाँ ले

आओ।

बलदेवजी हतप्रभ रह गये। महाराज तो अन्तर्यामी हैं वे सबकुछ जान लिये। ब्रह्मचारी से कहे कि पूरी शरीर में भभूत लगालो। अपने पास इस छड़ी को लेकर वीर आसन पर बैठ जाओ मैं जिस तरफ इशारा करुँ उधर छड़ी करना?

उधर सूबा के भेंजे हुये ३० जितने सैनिक आकर महाराज को पकड़ने के लिये दौड़े। इधर महाराज ने ब्रह्मचारी को जो बिधिबताई थी उसके अनुसार महाराज की जिधर इशारा हो उधर छड़ी करते और एक-एक कर सभी सैनिक भूमि पर गिर गये। पुनः छड़ी का इशारा किये कि सभी उठ खड़े हो गये। सभी महाराज के चरण में आकर गिर कर मांफी मांगे और कहने लगे कि आप हमारे अल्लाह हो। उन सैनिकों को वापस देखकर सूबा आग बबूला हो गया। जमादार ने कहा साहब ? वे तो स्वयं खुदा है। उनके साथ बराबरी करने की भूल नहीं करनी चाहिये। मैं शत्रुओ के साथ लड़ सकता हूँ लेकिन खुदा के सामने नहीं उसी समय श्रीहरि ब्रह्मचारी के साथ उसके घर पहुंच गये। सूबा अपने घर भभूत लगाये ब्रह्मचारी के साथ श्रीहरि को आया देखकर ब्रह्मचारी को आसन पर बैठाया, महाराज को सेवक समझकर मात्रसंमान किया।

श्रीजी महाराज सूबा से कहे कि आप सूबा लालदास के नाम से प्रसिद्ध हो, हमारे संतो को क्यों परेशान करते हो। साधु तो समाज के उद्धारक है। उन्हें दुःख देने से यमपुरी की यातना मिलती है। ऐसा शास्त्र में वर्णित है। यह शास्त्र नहीं मानता। जो मुझे प्रत्यक्ष दिखाई देता है। वहीं मानता हूँ। सूबा की आवाज में सत्ता का मद था। यदि प्रत्यक्ष देखना चाहते हो तो हम तुम्हें प्रत्यक्ष बतायेंगे। उसी समय सूबा को समाधिमें डालकर यमलोक की यमयातनाओं को दिखाया। उसकी शरीर जमीन पर गिर पड़ी और जीव मात्र यम लोक में चला गया। यह सभी को प्रत्यक्ष दर्शन हुआ। महाराज पुनः दृष्टि किया तो सूबा का जीव उस शरीर में आ गया। समाधिका अनुभव होने से वह कांप रहा था। श्रीहरि के चरणों में गिरकर मांफी मांगने लगा।

श्रीहरि उसके किये को भूलकर उसे मांफ कर दिये। उसका निर्मल मन हो गया। अब वह कहने लगा नाथ ! आप अपना आश्रित बना लीजिये इस पापी का पाप दूर करो। अनंत जन्मों से भटकता हुआ यह जीव आज प्रभु की शरण में आया है। महाराज उसे नियम-धर्म देकर स्वीकार कर लिये।

हे परवरदिगार ! आप ही खुदा है। इस तरह की वाणी बोलते हुये सभी प्रभु की बंदगी करने लगे। विसनगर के भक्त आज श्रीहरि का अद्‌भुत स्वरुप देखकर आनन्दित हो रहे थे।

संध्याकाल हो रहा था मंदिर में घंटानाद की आवाज सुनकर महाराज संध्यावंदन करने के लिये खड़े हुये। भक्तजन भी उन्हीं के साथ चल दिये।

**श्री स्वामिनारायण मासिक के सदस्यो को सूचना**

अपना श्री स्वामिनारायण मासिक प्रति महीने की ११ तारीख को पोस्ट होता है। कुछ सदस्यो को नियमित रुप से अंक नहीं मिलते है ऐसी शिकायत आती है। तब ओफिस अंक अगर स्टोक में हो तो पुनः प्रेषित करती है। किंतु सभी सदस्यों के अंक शहर हो तो पीनकोड के मुताबिक तथा गाँव में जिला के मुताबित पोस्ट किया जाता है। यदि आपको अंक न मिले तो पोस्ट ओफिस में शिकायत करे तथा यदि पता बदलता है तो यहाँ सभ्य नंबर तथा पीनकोड के साथ नया पता बतायें।

# सत्संग बालवाटिका

संपादक : शास्त्री हरिकेशवदासजी (गांधीनगर)

## दीपावली का रहस्य

- शा. हरिप्रियदासजी ( गांधीनगर )

प्रतिवर्ष दिपावली आती है और जाती है। इस तरह कितनी दीपावली जीवन में आई और गई। परंतु इसका रहस्य जाने बिना यथार्थ समझना कठिन है। बाहर जलता हुआ दीपक अन्तः करण में प्रकाश नहीं दे सकता। त्यौहार या उत्सव का रहस्य समझना आवश्यक है।

बात मजेकी है। किसी गाँव में एकमहात्मा का आश्रम था। महात्माजी बड़े पवित्र एवं तपस्वी थे। सदा मौनव्रत धारण करके प्रभु स्मरण करते रहते थे। किसी भक्त को कोई प्रश्न होता तो लिखकर बतादेते और बाद में प्रभु का स्मरण करने लगते थे।

एकबार किसी श्रद्धालु का समुदाय महात्माजी के पास आया और महात्माजी से कहने लगा कि हे महाराज हम सभी बहुत दुःखी हैं। हमारे गाँव में रात्रि के समय अंधकार होने पर कोई काम नहीं होता। सभी अंधकार के वातावरण में क्रिया शून्य हो जाते हैं। इस अन्धकार के निवारण का उपाय बताइये।

महात्माजी तो मौनव्रत धारी थे। आये हुये भक्त अनपढ थे, इसलिये महात्माजी एक कागज के ऊपर एक दीपक बनाये और उसमें तेल तथा रुई की बत्ती का चित्र बनाकर उन सभी को दिये। उस दीपक को लेकर सभी अपने गाँव आये। एक स्थान पर उस कागज के ऊपर बने चित्र को रख कर सभी रोरी-अक्षत से फूल इत्यादि से पूजन करने लगे जप करने लगे फिर भी प्रकाश नहीं हुआ। कुछ लोगों ने जप की संख्या बढा दी फिरभी प्रकाश नहीं हुआ। लेकिन महात्मा के बताये उस रहस्य को जानने का कोई प्रयास नहीं किया। इससे अंधकार जैसे का तैसा ही रहा, प्रकाश कहाँ से मिले जब उसे प्रज्वलित करें तभी प्रकाश मिल सकता है। इसी को कहते हैं दीपक तले अंधेरा। भगवान मानव मात्र के सुख के लिये आत्यन्तिक कल्याण के लिये शिक्षापत्री में उपाय बताये हैं। परंतु इसका धर्म संतो के पास जाकर समझेंगे तभी ब्रह्मानन्द स्वामी का शब्द सार्थक होगा -

सखी हैडे ते हरख न माय आज दीवाली रे।
हुं ते गमन थई मनमांय भूधर भाड़ी रे ॥

जब जब भगवान का दर्शन करें तब तब अन्तर में दीवाली जैसा प्रकाश प्रगट होने लगे वही आनंदकी दीवाली होगी।

रुडो दीवाली नो दिवस के, मंगल गाइये रे।
लई मेराइया लालजी रे, आपशे आपणे घेर ॥
ब्रह्मानंद कहे घी घणुं मांही पुरशुं सारी पेर।
मंगल गाइये रे .... ॥

भक्ति का, सत्संग का, सेवा का, उपासना का तथा सद्भावना का यथार्थ धर्म समझ में आजाय तो भगवान अपने घर प्रकाश लेकर स्वयं आजायेंगे। हमें मात्र भक्ति रुपी घी को डालने की जरुरत है। बालवाटिका के वाचक मित्र तथा छोटे-बड़े सभी वाचकों को सद्भावना के साथ नूतन वर्ष की शुभ कामनाओ के साथ जयश्री स्वामिनारायण।

●

## शास्त्र में जो विश्वास रखे उसका काम हो

- साधु श्रीरंगदास ( गांधीनगर )

"दीवाली आवी रे, आज मारे दीवाली आवी।"

आप दीवाली किस तरह मनायेंगे ? नूतन वस्त्र खरीदकर ? घर को रंगरोगान करके ? मीठाई बनाकर ? चाहे जैसे भी दीवाली को मनायें पर यह कभी न भूलें कि हम किसके आशीर्वाद से सुखी है ? जीवन में अश्रद्धा, अविश्वास को दूर करके सत्संग के रास्ते पर चलते हुये महाराजकी आज्ञा का पालन करते हुये हृदय में भक्ति

तथा सद्‌गुण रुपी दीपक को जलायेंगे तो अवश्य सुखी बनेंगे।

एक गरीब ब्राह्मण थे। उन्हे गीता पर खूब विश्वास था। उनकी पत्नी भी पढी-लिखी थी। दोनो गीता का पाठ करते थे। गीता में एक श्लोक है-

अनन्यां श्चिन्तयन्तो मां येजना: पर्युवासते।

तेषां नित्याभियुक्तानां खोग क्षेमं वहाम्यहम्॥

अनन्य भावं से जो मेरा चिन्तन करता है, भक्ति करता है उसका मोक्षमार्ग प्रशस्त होता है। उसका भरण पोषण भी हम करते हैं। ब्राह्मण देवता की पत्नी विचार करने लगीं कि भगवान का जब ऐसा वचन है तो हमारे पतिदेव रात दिन उन्हीं का चिन्तन करते रहते हैं फिर भी हम दोनो दु:खी हैं। इससे यह लगता है कि यह श्लोक प्रक्षिप्त है। इसलिये उस श्लोक को चक्कू से काट डालीं। हमें प्रभु में विश्वास है। हम प्रभु में इतना प्रेम करते हैं फिर भी दु:खी है। इस तरह वाद विवाद करते हुये दोनो ने रात विताई। प्रात: होते ब्राह्मण देवता स्नान के लिये नदी गये। थोड़ा पहले पहुँचे थे इसलिये एक वृक्ष के नीचे बैठे थे रात भर के किचकिच से उन्हें नींद नहीं आई और वहीं पर नींद आ गयी। उधर पत्नी घर में प्रतिक्षा कर रही थी। उसी समय एक सोलह वर्ष का युवान वहाँ आया। सुन्दर स्वरुप था लेकिन उसके कपड़े फटे हुये थे। मुख के ऊपर से खून निकल रहा था। उस के मस्तक पर बड़ा सा एक पोटला था। उस युवान ने पूछा ब्राह्मण देवता का घर कहाँ है? क्या काम है? हमें ब्राह्मण देवता ने ही भेंजा है। लेकिन ब्राह्मण देवताने क्या भेंजा है? यह सब सोना-हीरा है। उसे बड़ा आश्चर्य हुआ। इतनी बड़ी सम्पत्ति कहा से आगयी। अरे भाई तुम्हारा क्या नाम है? मेरा नाम पुरुषोत्तम है। तुम्हें पानी पीना है? नहीं। मजदूरी कितनी हुई। मजदूरी मैं क्या लू। मेरे ऊपर आपके पति का बहुत बड़ा ऋण है। इस तरह कितने ही पोटले आपको देने के बाद मैं ऋण से मुक्त हो पाऊँगा। बाद में ओढकी तरफ देखकर कहने लगी कि यह कोई रोग हुआ है क्या? नहीं मुझे कोई रोग नहीं हुआ है। हाँ यह चोट चक्कू की है। ऐसा कौन दुर्जन व्यक्ति होगा जो इस गरीब को चक्कू से मारा होगा। इस तरह वह कह ही रहीं थी कि वह नौकर (पुरुषोत्तम) वहाँ से चला गया। उधर दोपहर हुई और ब्राह्मण देवता धीरे-धीरे नदी की तरफ से घर आये। वह ब्राह्मणी स्वभाव वश पूर्व की तरह गरम होकर बोलने लगी। आपने नौकर से इतना साराधन भेंज दिया क्या साथ नहीं आ सकते थे। अरे देवी क्या कह रही हो, धन कहाँ से और कौन लाया। पत्नी कहने लगी एक युवान लड़का सुन्दर स्वरुप लेकिन मुखपर चक्कू की चोट लगी थी, वह आकर कहा कि ब्राह्मण देवता पर मेरा बहुत ऋण है, उसे उतारने के लिये आना पड़ा। अपना नाम पुरुषोत्तम बताया। ब्राह्मण देवता भीतर जाकर गीता को खोलकर देखते है तो गीता के "अनन्याश्चिन्त यन्तो मां" इस श्लोक को पत्नी ने चक्कू से काट डाला है, देखते ही उन्होंने पूछा कि तुमने यह क्या किया, तो पत्नीने बताया कि दु:खी होकर मैंने ही यह किया है। यह सुनकर ब्राह्मण देवता ने कहा कि तुमने अच्छा नहीं किया, भगवान अपने वचन का पालन करते हैं, वे भगवान ही थे। बहुत बड़ा अपराधहुआ है। दोनो प्रभु से मांफी मांगने लगते हैं और कहते हैं कि हे प्रभु जब तक पुन: आप आकर दर्शन नहीं देते तब तक हम अन्नजल ग्रहण नहीं करेंगे। ऐसा कह कर वे दोनो भगवान की भजन करने लगे। उस समय भगवान वहाँ आते हैं और कहते हैं कि मेरे वचन पर तथा मेरे शास्त्रों में पूर्ण विश्वास रखना। मैं अपने भक्तों का ख्याल सदा रखता हूँ।

इष्टदेव श्री स्वामिनारायण भगवान में तथा उनके वचन में दृढ विश्वास तथा श्रद्धा हो तो जीवन में सदा दीवाली रहेगी। ब्रह्मानन्द स्वामीने लिखा है कि -

ब्रह्मानंदना रे वाला तम संग रतमा मारे,
दाडी दाडी दे दीवाली,
हैडा मां मुने वाला लागो को वनमाली॥

# भक्ति सुधा

**प.पू.अ.सौ. गादीवालाजी के आशीर्वाद में से**

**"समदृष्टि की प्राप्ति"**

- संकलन : कोटक वर्षा नटवरलाल (घोडासर)

आषाढ शुक्ल एकादशी अर्थात् नियम की एकादशी। इस विषय पर पूज्य गादीवालाजीने सभा में नियम लेने की आज्ञा करते हुये बताई की श्रीजी महाराजने शिक्षापत्री में ऐसी आज्ञा की है कि जिन्हे जो योग्य हो वह आषाढ शुक्ल एकादशी से प्रारम्भ होने वाले चातुर्मास में नियम लेकर पालन कर सकती है। उस नियम के साथ मैं भी आप सभी को नियम दे रही हूँ। किसी की निंदा नहीं करना, किसी के प्रति इर्ष्या का भाव नहीं रखना, राग-द्वेष, मेरा-तेरा, स्वार्थभाव, दंभ जैसे दुर्गुणों का त्याग करना है। इससे मन पवित्र होता है और मन में प्रभु की प्राप्ति के साथ मन की प्रसन्नता बनी रहती है। इस तरह करने से अन्तः शत्रुओं पर विजय मिलती है। विशेष रुप से क्रोधमान, माया, लोभ जैसे दोषों से दूर रहना चाहिये। दूसरे नियमों के साथ इन नियमों का पालन करने से आप सभी के जीवन में शांति का अनुभव होने लगेगा। अंत में यह भी बताई की किसी के दोष नहीं देखना चाहिये। यदि दोष देखना हो तो अपने भीतर दोष देखना चाहिये।

निजदोष दर्शन विना, बंधन भवो भव तणुं।
खुले समदृष्टि स्वदोष देख्याथी, तरे भवसागर घणुं॥

प.पू. गादीवालाजी ने जो नियम दिया उसमें बहुत बड़ा रहस्य है। यह यदि समझ में आजाय तो यहीं पर मोक्ष जैसा दिखाई देने लगा। जीवन में आनंद की अनुभूति होने लगती है। जीवन में कोई बुरी आदत हो तो व्यक्ति उससे रहित होने लगता है।

अपने में दोष देखा जाय तभी जागृति आयेगी। घर में चोर बैठा हो तो कब तक बैठा रहेगा ? मालिक जब तक जानता न हो तब तक मालिक जान जाय तो उसे पकड़ लेगा। पू. गादीवाला हम सभी में दोष देखने की आज्ञा की है। इस लिये हम सभी इस आज्ञा का पालन करेंगे दोष रुपी चोर अपने आप निकल जायेगा। श्रीजी महाराजने वचनामृत में कहा है कि "थोडी बुद्धिवालो होय ने जो पोतामां अवगुण होय तेने जाणीने तेने टाण्यो उपाय करे तो तेने जाणीने तेने टाण्या नो उपाय करे तो एनी थोड़ी बुद्धि पण मोक्षने उपयोगी थाय छे। अने एनेज बुद्धिवालो कहिये।

•

**आशरामे विश्वास तथा श्रद्धा**

- सां.यो. कोकिलाबा (सुरेन्द्रनगर)

जगत में प्राणी मात्र को कोई न कोई आश्रय तो होता ही है। स.गु. गुणातीतानंद स्वामी की बातो में लिखा है कि आश्रय बहुत बड़ी बात है। भगवान का आश्रय किये बिना जीव का कल्याण नहीं होता। श्रीजी महाराजने वचनामृत में आश्रय की बात की है। भगवान को प्रसन्न करने के लिये दृढ आश्रय आवश्यक होता है।

आश्रय में विश्वास जरुरी है। शंका का स्थान इसमें नहीं होना चाहिये। जो इसमें आगे बढ़ा उसे पीछे हटना नहीं चाहिये, अन्यथा कल्याण की सम्भावना कम हो जाती है। जिसका आश्रय स्वीकारे उसका होजाना आवश्यक है। शरणागति से भगवान की प्रसन्नता मिलती है। इससे भगवान अपने वश में हो जाते है। एक गाँव में एक बालक अपने भाई-भाभी के साथ रहता था। उसका नाम केलवो था। उसके मां-बाप छोटी उम्र में ही स्वर्गस्थ हो गये थे। इसलिये बड़े भाई की देखरेख में

वह पला था । दोनो भाई में खूब प्रेम था । लेकिन भाभी को वह बालक अच्छा नहीं लगता था । उसें परेशान किया करती थी । वह बालक शांत स्वभाव का तथा बहुत सरल था । भगवान का भक्त था । उसे गप्पा-सप्पा अच्छा नहीं लगता था। मात्र भगवान की कथा-कीर्तन अच्छा लगता था । प्रतिदिन वह गाय चराने जाता था । गायो में उसकी बहुत श्रद्धा थी । भगवान का आश्रय मानता था । परंतु उसकी भाभी उसे देखना नहीं चाहती थी । इसलिये अपने से उसके विपरीत भड़काती थी । यह जादू की विद्या सीखता है, आपको मारडालेगा तो क्या होगा । इसलिये इसे घर से निकाल दीजिये । यह वात भाईने मान लिया । सायंकाल छोटा भाई घर आया तुरंत ही बड़े भाई ने उसे कह दिया कल से तूं घर में नहीं रहेगा । उस छोटे बालक को कुछ समझ में नहीं आया । लेकिन भाई की आज्ञा हुई वह घर से निकल पड़ा । गाँव वालो से पूछा कि अब मैं कहा जाऊँ मेरे भाई ने मुझे घर से निकाल दिया है । यह सुनकर किसी ने मजाक में कहा तूं तो भगवान पर बड़ा विश्वास करता है उन्ही के घर चलाजा । उसने स्वभाव वस पूछा वे कहाँ रहते है ? सामने से कहा कि, द्वारका में रहते हैं । अब वह द्वारका के लिये चल दिया । उसको एकही लगन थी कि भगवान का घर कब मिले, भगवान कब मिलें ? भूखे प्यासे चलता रहा । पांच दिन तक लगातार चलते रहने के बाद द्वारका नगरी का दर्शन हुआ । अब वह भगवान के दर्शन के लिये व्यग्र होने लगा । जिस किसी तरह भगवान के मंदिर में पहुँचने के बाद भी सीढी चढने की ताकाल नहीं रही और परिक्रमा स्थल पर जाकर गिर गया । पुजारी ने पूछा कि यहाँ क्यों पड़े हो ? मैं भगवान को मिलने के लिये पड़ा हूँ । पुजारी ने तिरस्कार करते हुये कहा ''तुम्हारे भगवान तो सोगये । दरवाजा बन्द हो गया । अब और व्यग्र होने लगा और कहने लगा कि प्रभु ? मैं आपके दर्शन के लिये भूखेप्यासे यहाँ आया आपका दर्शन नहीं हुआ ? दरवाजा बंद हो गया । तब आवाज आयी तुम्हारे लिये कभी दरवाजा बंद नही है । जिधर गिर पड़ा था उसी तरह मंदिर का मुख फिरकर हो गया । वह दरवाजा भी अपने आप खुल गया । भगवान बाहर आ गये । केवला को उठाकर गले लगा लिये । केवले के आनदं की सीमा न रही । उस भक्त के आधीन होकर द्वारका का मंदिर भगवान ने पश्चिम मुखी कर दिया । आज भी उसी रुप में दिखाई देता है । केवलो भगवान की कथा सुनने से इस तरह भक्त हुआ और भगवान ने उसका सर्व विधकल्याण कर दिया । इस तरह जो भी भगवान की कथा का नियम लेता है और उनके वचन में विश्वास रखता है उसे अवश्य भगवान की प्राप्ति होती है ।

•

### आषाढी का तोल

- पटेल निशा विष्णुभाई (गुलाबपुरा)

स.गु. गोपालानंद स्वामी के चमत्कार आज भी दिखाई देते हैं । उसका एक उदाहरण आषाढी तोल है । टोरडा के श्री स्वामिनारायण मंदिर में आषाढी पूर्णिमा की रात्रि में गाँव के लोग एकत्रित होते है । आज के दिन कृषक, व्यापारी या अन्य सभी लोग जिसे जो अनुकुल होता वे वह वस्तु तोला के हिंसाव में ले आते - चाहे वह आनाज हो या सोना हो । सभी को एकत्रित करके घड़े में बन्द करके भगवान के सिंहासन के पास रख दिया जाता है । पुनः दूसरे दिन उन घड़ो को खोला जाता है । जिस में बढत होती है उस वस्तु की वर्ष भर बढती होती रहती है, जिसमें कमी आती है उस वस्तु में सालभर कमी होती रहती है । यह प्रक्रिया प्रतिवर्ष आषाढी पूनम से प्रारंभ

करके द्वितीय दिन अर्थात् प्रतिपदा तक करते है। इस परिणाम के आधार पर सभी के व्यवसाय की स्थिति जानली जाती है। यह एक चमत्कार ही कहा जायेगा।

●

### नीलकंठ वर्णी बोचासन में

- तरलाबहन अतुलभाई पोथीवाला (अहमदाबाद)

बोचासण गाँव में कानजी पटेल भगवान के भक्त रहते थे। वे एकबार घर में सो रहे थे। उसी समय आकाशवाणी हुई कि उठो कानदास आपके गाँव में परम पिता परमेश्वर का आगमन हो चुका है। जाकर उन्हे प्रणाम करो। आपकी भाग्य खुल जायेगी। आपका मोक्ष सुधर जायेगा। कानदास पटेल तुरंत वहाँ से चल दिया। अपनी मां को सम्पूर्ण घटना बता कर चलने लगा तो मां ने कहा उस ब्रह्मचारी को साथ बुलाकर आना। आज मैं ब्राह्मणों के लिये रसोई बनाई हूँ, उस ब्रह्मचारी को भी बुलाकर लेआ। वह भक्त सुनते ही दौड़ते गया। वहाँ जाकर देखा तो नीलकंठ वर्णी के शरीर से प्रकाश फैल रहा था। सभी उस दिव्य रुप को देखते ही रह गये। बाद में सभी नजदीक जाकर वर्णी को प्रणाम करके बैठ गये। कानदास पटेल का बेटा काशीदास वहीं खड़े ही स्तवन करने लगा। हे प्रभु ? आप मेरी मां का तथा मेरा संकल्प पूर्ण कीजिये। आप हमारे घर पधारिये। सभी इसी तरह प्रार्थना करने लगे।

सभी भक्तों का निवेदन सुनकर नीलकंठ वर्णी बोचासण के कानदास पटेल के घर आये। वर्णी के स्वरुप को देखकर कानदासकी वृद्धा माता। खूब प्रसन्न हो गयी। ब्राह्मणों से नीलकंठ वर्णी का पूजन करवाकर सभी को भोजन करायी। नीलकंठ वर्णी को उच्च आसन पर बैठाकर उन्हें भोजन कराने लगी। लेकिन महाराजने कहा हम भोजन नहीं करेंगे। हम दुधभात खाना चाहते है। यह सुनते ही वह महिला तुरंत भैंस को दुह कर दूधभात लाकर सामने रखदी। अब वे उस प्रसाद को खाकर तृप्ति का अनुभव करने लगे। वृद्धा माता ने कहा वर्णी ? आप हमारे घर पर ही रहिये। महाराज ने कहा, अभी हमें बहुत काम करना है। इसलिये अभी जायेंगे। बाद में आयेंगे और आपका एक पुत्र बड़ा भाग्यशाली होगा। आपका पूरा कुटुम्ब मेरा आश्रित होगा। आज से करीब दश वर्ष बाद आपके परिवार से हमारी भेंट वडताल में होगी।

ऐसा आशीर्वाद देकर वर्णी वहाँ से निकल पड़े, जब तक वे दिखाई देते रहे तब तक पूरा परिवार देखता रहा।

●

### संतो की निष्ठा

- परमार भूमिका भगवानजीभाई (सुरत)

आज के घोर कलिकाल में जिसने भगवान स्वामिनारायण को पहचान लिया, उसका बेड़ा पार हो गया। ऐसे सर्वावतारी भगवान स्वामिनारायण की आज्ञा में सभी को रहना चाहिये, इसी में सुख है। इस अलौकिक संप्रदाय के प्रचार के लिये संतो को काफी परेशानी उठानी पड़ी थी।

भगवान स्वामिनारायण की आज्ञा थी कि संत किसी से भीक्षा में जो भी प्राप्त करें उसी में संतुष्ट रहें। एक बार एक संत प्रातः भिक्षा मांगने गये उस घर में पति पत्नी में झगड़ा हुआ था। पति धंधे में बाहर चला गया, पत्नी अकेली घर में थी। वह बहुत क्रोधी थी साथ में अभी अभी दोनो झगड़े थे। महाराज की आज्ञा है कि क्रोधी व्यक्ति का कभी विश्वास नहीं करना चाहिये।

संयोग भी ऐसा ही हुआ कि वे संत ज्यौंहि उस महिला के द्वार पर भीक्षा मांगे कि त्यौंहि अपने हाथ के पोते उस संत के झोली फेंक मारा। झोली में जो भी मिला उसे

लेकर वे संत वहाँ से चल दिये । तालाब के पास जाकर उस पोते को धोने लगे । वह पोता इतना सड़ गया था कि ज्यों पानी में डाले कि वह बिखर गया ।

उधर महिला के घर में ऐसा हुआ कि सायंकाल जब पति काम पर से आये तो आप वीती वात पति से कहने लगी कि जब आप झगड़ने के बाद चले गये तो मैं बहुत क्रोधमें पोता लगा रही थी उसी समय एक संत भीक्षा मांगने आये और मैं क्रोधमें उसी पोते को उनके ऊपर फेंकी, वह पोता उनकी झोली में गिर गया, वह संत विना कुछ बोले वहाँ से चले गये ।

अब मुझे बहुत पश्चात्ताप हो रहा है । मैंने बहुत बड़ा पाप किया है । साधु का अज्ञान में अपराधहुआ है । आप जाइये वे संत जहाँ भी हों बुलाकर ले आइये मैं मांफी मांगूगी ।

पतिदेव पत्नी की वात सुनकर संत के पास चले । तालाब के किनारे संत भगवान का ध्यान कर रहे थे । वहाँ पहुंच कर संतो से अपनी पत्नी के अपराधकी वात की । संत तो दयालु होते हैं, उन्होंने कह दिया कि जाओं माफ कर दिया और अब कल आप के घर प्रसाद लेने भी आयेंगे । इसके बाद वे दोनो दंपती सत्संगी हो गये ।

इस तरह संघर्ष करके संतोने सम्प्रदाय की प्रतिष्ठा को आगे बढाया है । जो भी सत्संगी स्त्री पुरुष हों वे पू. महाराजश्री तथा पू. गादीवालाजी की तथा महाराज की आज्ञा में रहेगें वे अवश्य सुखी होंगे । ( शि.पत्री भाष्य विवचेन में से ) ।

•

### समझ विना का प्रेम

- पटेल अंजना आर. (वजापर)

सबसे उत्तम भगवान की भक्ति है । भक्ति धर्म के साथ करना चाहिये । धर्म के विना की गयी भक्ति अधूरी कही जायेगी ।

एक संत एक गाँव में किसी भक्त को कंठी बांधे और कहे कि भगवान की दीक्षा लेकर भगवान की भजन करेगा तो बहुत सुखी होगा । प्रतिदिन मंदिर आना, भजन करना, माला फेरना, हाँ अवश्य करुँगा । भजन सिवाय इस संसार में और क्या है ? लेकिन वह भाई किसान था । संत से कंठी बंधवाकर घर आया तो उसकी एक भेंस मर गयी थी । पत्नी से पूछा यह कब की मरी है । पत्नीने कहा आधा घंटा पहले । तो आधा घंटा पहले ही मैंने संत के पास गले में कंठी संत से बंधवाई और आधा घंटे पहले ही यह भैंस मर गयी । यह तो बिल्कुल गलत है । मैं जाकर उस साधु को कंठी वापस कर आता हूँ । संत के पास जाकर कहा कि आप अपनी कंठी वापस ले लीजिये । इस कंठी के बांधने से ही मेरी भेंस मर गयी । संत ने बहुत समझाया लेकिन वह समझा नही । समझ के विना, माहात्म्य के विना यदि प्रेम किया जाय तो यही स्थिति होती है । अब संत विचार करने लगे कि इसका भला करना है और यह अनपढ किसान है कैसे समझायें । तुरंत एक युक्ति लगाई, अरे भाई यदि कंठी पहनने से एक भेंस मर गयी तो इसके निकालने पर दूसरी मर जायेगी । वह भक्त विचार करने लगा कि तब तो हम कंठी नहीं निकालेंगे । अब वह अपने घर आया और संत की बात पत्नी से बताया । पत्नीने कहा यदि कंठी रखने से दूसरी भैंस बच जाय तो कंठी नहीं निकालना । स्थिति ऐसी हुई कि धीरे धीरे व सुखी होने लगे । बाद में तो वे दोनो पति पत्नी भगवान की भक्ति करने लगे, उन्हें अच्छी समझ आ गयी । यह संत के साहचर्य का प्रताप है । ज्ञान के विना भक्ति रुकती नहीं है । ( शि.पत्री भाष्य विवचेन में से ) ।

## श्री स्वामिनारायण म्युझियम उद्घाटन महोत्सव
### दि. ५-३-२०११ से दि. ९-३-२०११

देश-विदेश में रहनेवाले सत्संगियो को नये वर्ष का जय स्वामिनारायण।

हम सभी जातने हैं कि प.पू. बड़े महाराजश्री का दिव्य संकल्प अर्थात् "श्री स्वामिनारायण म्युझियम" का उद्घाटन महोत्सव नजदीक आ रहा है। प.पू. आचार्य महाराजश्री की अध्यक्षता में ये उत्सव दि. ५-३-२०११ से दि. ९-३-२०११ पर्यंत धामधूमपूर्वक मनाया जायेगा ( दि. ८-३-२०११ को म्युझियम का उद्घाटन होगा )

देश-विदेश में रहने वाले श्रीहरि के सभी भक्तों को इस उत्सव में पधारने का आमंत्रण है। किन्तु विदेश से जो भक्त इस उत्सव का लाभ लेने आये उनकी योग्य तथा सुंदर व्यवस्था करना आवश्यक है। इसलिये जो भक्त विदेश से आने वाले हों वे नीचे दर्शाये उनके देश के प्रतिनिधिको अपना कार्यक्रम बताये तथा आप कौन सी व्यस्था मंदिर से चाहते है, जैसा कि रहने की, वाहन की, या कोई और जरुरत हो वे बताये। अपना घर समझ कर जरुरत बतायेंगे तो योग्य व्यवस्था की जायेगी। यदि आप अपने आत्मीयजनो के यहाँ रहने वाले है तब भी उत्सव में सहभागी होंगे तथा व्यवस्था स्वयं कर लेगे, ये भी उन्हे बताइयेगा।

आपसे प्राप्त जानकारी से ही आपकी व्यवस्था तथा स्वागत किया जायेगा। तथा आपके अनुरुप व्यवस्था की जायेगी इसलिये योग्य सहयोग दीजियेगा।

**INDIA**

(1) Brahmchari Swami Rajeshwaranandji
Ph. : 0091 98790 03379
E-mail : rajuswami18@yahoo.com

(2) Mr. Tushar Dashrathbhai Patel - A'bad
Ph. : 0091 99780 66166

(3) Mr. Bharat Kantlal Thakar - A'bad
Ph. : 0091 99250 27662
E-mail : bktthakkar@gmail.com

(4) Mr. Pankat Ramanbhai Bhavsar - A'bad
Ph. : 0091 99258 48249

(5) Mr. Zaverbhai - A'bad
Ph. : 0091 98258 87453

(6) Mr. Prakashbhai - A'bad
Ph. : 0091 98256 00136

**U.S.A.**

(1) Mr. Jagdish Patel - Chicago
Ph. : 001-708-945-9390
E-mail : jjack_patel@hotmail.com

(2) Mr. Prakash Patel - Clevaland
Ph. : 001-216-849-9206
E-mail : cle.isso@gmail.com

(3) Mr. Ishwar Chaudhary - L.A.
Ph. : 001-949-292-8035
E-mail : ishwar67@gmail.com

(4) Mr. Rajesh Patel - C'hill
Ph. : 001-302-897-6729
E-mail : rajeshpushpa3@yahoo.com

(5) Mr. Pankaj Patel - N.J.
Ph. : 001-201-233-7576
E-mail : jumpn04@gmail.com

(6) Mr. Nimesh Patel - C.N.J.
Ph. : 001-732-447-3814
E-mail : patelnimesh@gmail.com

**U.K.**

(1) Mr. Ashok Naran Hirani
Ph. : 0044-797-326-6887
E-mail : info@intertherm.co.uk

(2) Mr. Yogesh Patel - Leicester
Ph. : 0044-782-541-4044
E-mail : yogi.j.patel@hotmail.co.uk

(3) Mr. Shivjibhai Premji Hirani - Willsdenlane
Ph. : 0044-208-459-4506, 208-968-9752
E-mail : info@shreeswaminarayan.org.uk

(4) Mr. Suresh Patel - Harrow
Ph. : 0044-791-708-0601

**AUSTRALIA**

(1) Mr. Nilesh Patel - Sydney
Ph. : 0061-423-600-493
E-mail : dearneel2000@yahoo.com

(2) Mr. Jayesh Patel - Sydney
Ph. : 0061-432-229-227
E-mail : jkdpatel@yahoo.com.au

(3) Mr. Bobby Dave - Sydney
Ph. : 0061-415-966-739
E-mail : davevishad@gmail.com

(4) Mr. Dipak Raghvani - Melbourne
Ph. : 0061-421-506-666
E-mail : deep.raghvani@gmail.com

(5) Mr. Ravjibhai Halai- Perth
Ph. : 0061-427-475-979
E-mail : rhalai@bigpond.net.au

**NEWZEALAND**

(1) Mr. Dr. Kanti Patel
Ph. : 0064-212-464-710
E-mail : kanti@ethc.co.nz

**AFRICA**

(1) Mr. Virji Raghvani - Nairobi
Ph. : 00254-722-528-333
E-mail : arvind@laxconke.com

(2) Mr. Dinesh Hirani - Mombasa
Ph. : 00254-733-614-441
E-mail : dinshirani@yahoo.com

(3) Mr. Kurjibhai - Nairobi (Tabanu)
Ph. : 00254-722-521-636

(4) Mr. Ramjibhai - Eldoret
Ph. : 00254-733-634-769

# सत्संग समाचार

### श्री स्वामिनारायण मंदिर अहमदाबाद में शरदोत्सव मनाया गया

आश्विन शुक्ल पक्ष-१५ शरद पूर्णिमा के शुभ अवसर पर अहमदाबाद श्री स्वामिनारायण मंदिर में परम कृपालु श्री नरनारायणदेव के शुभ सानिध्य में तथा श्रीहरि के छट्ठे वंशज प.पू. बड़े महाराजश्री तेजेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री की उपस्थिति में मंदिर के विशाल रमणीय प्रांगण में सुंदर देदीप्यमान श्वेत वस्त्रो से सजाकर भव्य अलौकिक मंडप में ठाकुरजी को बिराजमान करके श्री नरनारायणदेव उत्सव मंडल ने परंपरागत स्वरुप से शरदोत्सव का उत्सव मशहूर नंदसंतो रचित कीर्तनो के साथ मनाया गया। अहमदाबाद मंदिर के महंत शा.स्वा. हरिकृष्णदासजी तथा कोठारी पार्षद दिगंबर भगत के मार्गदर्शन से संत मंडल ने सुंदर आयोजन किया था। अंत में प.पू. बड़े महाराजश्री के हाथों से पूर्णाहुति की आरती धूमधाम से सम्पन्न हुई। उसके बाद सभी को दूध चीउड़ा का प्रसाद बाँटा गया था।- शा. नारायणमुनिदास

### श्री स्वामिनारायण मंदिर अहमदाबाद में दीपोत्सव मनाया गया

समूह शारदा पूजन : आश्विन शुक्ल पक्ष-१४ ता. ५-११-२०१० के शुभ दिन शाम के ६-०० बजे परम कृपालु श्री नरनारायणदेव के शुभ सानिध्य में श्री नरनारायणदेव पीठाधिपति प.पू.ध.धु. आचार्य १००८ श्री कोशलेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री के शुभ हाथों से समूह शारदा पूजन विधिशास्त्र के अनुसार विद्वान पंडितो के सुमधुर मंत्रोच्चार के साथ संपन्न हुआ। प्रसादी के दिव्य सभा मंडप में एक हजार से भी अधिक श्रद्धालु भाविक वेपारीओं ने अपने धंधा-उद्योग तथा व्यापार की शुद्धता, निष्ठा, नीतिमत्ता तथा श्रीहरि द्वारा शिक्षापत्री की आज्ञा अनुसार धंधा-व्यापार में प्रगति हो इस हेतु शारदापूजन में लाभ लिया था। श्रीहरि के सातवें वंशज तथा अपर स्वरुप के हाथों से पूजन का लाभ लेने का अर्थ जीवन को सद्भागी बनाना है। समस्त सभा मंडप पुस्तकों के ढेर से सुंदर शोभायमान लग रहा था। शारदापूजन विधिकी पूर्णाहुति की आरती उतारकर प.पू. महाराजश्री स्वस्थान पधारे थे।

स.गु. महंत शास्त्री स्वामी हरिकृष्णदासजी तथा कोठारी पार्षद दिगंबर भगत के मार्गदर्शन से जे.पी. स्वामी, जे.के. स्वामी, बलदेव स्वामी ( बापू स्वामी ), नटु स्वामी, शा. स्वा. विश्वविहारीदासजी, ब्रह्मचारी स्वामी राजेश्वरानंदजी, योगी स्वामी, मुनि स्वामी, दिव्यप्रकाश स्वामी, भूषण भगत आदि संत पार्षद मंडल तथा उर्मिक, हार्दिक, तपनभाई तथा कोठार स्टाफने इस प्रसंग पर सुंदर सेवा की थी। इस सुंदर प्रसंग को दूर दर्शन तथा ई.टी.वी. की केमेरा टीमने कवरेज करके समग्र गुजरात की धर्मप्रेमी जनता को उसके दर्शन करवाये थे।

छप्पन भोग अन्नकूट दर्शन : ता. ६-११-२०१० को शनिवार के श्री नरनारायणदेव को भव्याति भव्य अन्नकूट का भोग लगाया गया था। दोपहर १२-०० बजे प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री, प.पू. बड़े महाराजश्री तथा प.पू. लालजी महाराजश्री के वरद् हाथों से अन्नकूट आरती विधिपूर्वक सम्पन्न हुई थी। इस प्रसंग के दर्शन दिव्याति दिव्य थे। संत हरिभक्तों की अपरंपार भीड़ थी। शहर, ग्राम तथा बाहर गाँव के कई हरिभक्त दर्शन हेतु पधारे थे। अन्नकूट की शोभा अक्षरधाम समान प्रतीत हो रही थी। इस प्रसंग की सेवा में महंत शास्त्री स्वामी हरिकृष्णदासजी तथा कोठारी पार्षद दिगंबर भगत की प्रेरणा मार्गदर्शन से जे.पी. स्वामी, बलदेव स्वामी ( बापू ), योगी स्वामी, शा.स्वा. विश्वविहारीदासजी, नटु स्वामी, मुनि स्वामी, दिव्यप्रकाश स्वामी, भूषण भगत, चेतन भगत, वैभव तथा काठीयावाडी हरिभक्तगणने सेवा में योगदान दिया था। भंडारी स्वामी सूर्यप्रकाशदासजीने भंडार में अन्नकूट प्रसंग पर सुंदर व्यवस्था का संचालन किया था। २८ देश के गाँव में अन्नकूट प्रसाद पहुंचाने के लिये संतो के विविधमंडल ने अपनी सेवा प्रदान की थी। दिपोत्सव प्रंसग पर मंदिर को लाईट की रोशनी से भव्यता से सजाया गया था।

संवत २०६७ का नूतन वर्ष : सन् २०१० नूतन वर्ष ता. ७-११-२०१० के रविवार के दिन ब्रह्म मुहूर्त में प्रात: ५-०० बजे श्री नरनारायणदेव की मंगल आरती उतारने के लिए प.पू. बड़े महाराजश्री पधारे थे। उसके बाद बैठक में संत-हरिभक्तो को आशीर्वाद का सुख दिये थे। इस दिन हजारों की संख्या में हरिभक्तों ने प्रभु के दर्शन किये थे। जो कोई भी सभा में मिले उसे ईष्टदेव का नाम "जयश्री स्वामिनारायण" बोलकर नूतन वर्ष की शुभेच्छा देते थे। इस प्रकार आज का दिन धन्य अति धन्य हो गया था।

-शा. दिव्यप्रकाशदास

**श्री स्वामिनारायण मंदिर नारायणघाट के आंगन में भव्य शरदोत्सव मनाया गया**

श्री नरनारायणदेव पीठाधिपति प.पू.ध.धु. आचार्य १००८ श्री कोशलेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री तथा प.पू. बड़े महाराजश्री तथा समग्र धर्मकुल के आशीर्वाद तथा महंत स्वामी देवप्रकाशदासजी तथा स.गु.शा.स्वा. पुरुषोत्तमप्रकाशदासजी के मार्गदर्शन से श्री स्वामिनारायण मंदिर, नारायणघाट के आंगन में ता. २३-१०-२०१० आश्विन शुक्लपक्ष-१५ को शरद पूनम का शरदोत्सव धूमधाम से मनाया गया।

इस प्रसंग पर प.पू. बड़े महाराजश्री पधारे थे तथा दर्शन देकर नारायणघाट तीर्थ की महिमा आशीर्वाद के साथ बताये थे। इस प्रसंग पर मंदिर तथा भगवान का सिंहासन सुंदर सजाया गया था।

शरदोत्सव के मुख्य यजमान प.भ. भालजा साहेब के मंडल के प.भ. प्रबोधभाई छगनलाल जाला ह. डॉ. निकुंज घनश्यामभाई ( एम.डी. ) परिवारने सुंदर लाभ लिया था। यजमान परिवार ने प.पू. बड़े महाराजश्री का पूजन अर्चन करके आशीर्वाद प्राप्त किये थे।

चुरा की सेवा विनोदभाई डाह्याभाई तथा दूधकी सेवा बदपुरा तथा ईश्वरपुरा सत्संग समाजने तथा चीनी की सेवा पटेल गीरीशभाई सांकलचंदभाई आदि हरिभक्तोने की थी। रात्रि में मंदिर के चोगान में रास-गरबा के कार्यक्रम के बाद दुधचुरा का प्रसाद दिया गया था। महंत स्वामीने समूह आरती का सुंदर आयोजन किया था। रास में अच्छा रास खेलने वाले को यजमान के तरफ से अहमदाबाद मंदिर के महंत शा. हरिकृष्णदासजी के हाथों से प्रोत्साहित इनाम दिया गया। सभा संचालन शा. स्वा. चैतन्यस्वरुपदासजीने ( कोटेश्वर गुरुकुल ) किया था।

- कोठारी स्वामी बालस्वरुपदासजी )

**श्री स्वामिनारायण मंदिर नारायणघाट में प.पू.अ.सौ. गादीवालाश्री की शुभ निश्रा में बहनों की भव्य सत्संग सभा**

पवित्र साबरमती नदी के रमणीय सुंदर किनारे पर दिव्यतम शिखरी श्री स्वामिनारायण मंदिर नारायणघाट में ता. २८-९-२०१० मंगलवार के शुभ दिन पर समस्त बहनो के गुरु प.पू.अ.सौ. लक्ष्मीस्वरुप गादीवालाश्री के शुभ सानिध्य में दोपहर २ से ४-३० तक आयोजित सत्संग सभा में सांख्ययोगी बहनो का भगवान की लीला तथा धर्मकुल के महिमा का विस्तारपूर्वक वर्णन किया था।

जिसमें शाहीबाग, राणीप, नवावाडज, साबरमती, मेघाणीनगर तथा घाटलोडीया आदि विस्तार के बहनोने दर्शन का लाभ लिया था। संप्रदाय की मर्यादा को ध्यान में रखकर श्री घनश्याम महिला मंडल नारायणघाट तथा प.भ. नारणभाई ( गवाडावाले ) तथा मणीभाई ( वागोसणवाले ) भक्तिभाई ( देउसणा ) आदि हरिभक्त सुंदर व्यवस्था के सहयोगी बने थे।

-सत्संग महिला मंडल की तरफ से पुष्पाबहन

**श्री स्वामिनारायण म्युझियम के उपलक्ष्य में कर्म शक्ति मंदिर में १००८ समूह महापूजा**

प.पू.ध.धु. आचार्य १००८ श्री कोशलेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री, प.पू. बड़े महाराजश्री तथा समग्र धर्मकुल की आज्ञा-आशीर्वाद से तथा नारणघाट महंत शा.स्वा. पुरुषोत्तमप्रकाशदासजी ( छोटे पी.पी. स्वामी ) की प्रेरणा से ता. २६-९-२०१० के दिन श्री स्वामिनारायण मंदिर कर्म शक्ति पार्क १००८ समूह महापूजा का सुंदर आयोजन सम्पन्न हुआ।

अ.मु. स.गु. गोपालानंद स्वामी तथा स.गु. अखंडानंद स्वामी रचित तथा संकल्प सिद्ध महापूजा का सुंदर आयोजन श्री स्वामिनारायण म्युझियम के उपलक्ष में प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री तथा प.पू. भावि आचार्य

लालजी महाराजश्री के वरद् हाथों से प्रारंभ हुआ था। बहनों के आग्रह पूर्ण आमंत्रण पर प.पू.अ.सौ. लक्ष्मीस्वरुपा गादीवालाश्रीने पधारकर बहनों को दर्शन आशीर्वाद का सुख दिया था। संतो की प्रेरकवाणी के बाद प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री दिव्य आशीर्वाद देकर यहाँ के सत्संग को तथा श्री नरनारायणदेव युवक मंडल की प्रवृत्ति की प्रशंसा की थी। महापूजा की पूर्णाहुति के प्रसंग पर प.पू. बड़े महाराजश्री संत मंडल के साथ पधारे थे। तथा १००८ समूह महापूजा की पूर्णाहुति की आरती उतारकर सभा में पधारे थे। हरिभक्तों कों समस्त धर्मकुल के दर्शन का अलौकिक लाभ प्राप्त हुआ था। बापुनगर के कई हरिभक्तों ने श्री स्वामिनारायण म्युझियम में अपनी सेवा लिखवाई थी।

इस समग्र प्रसंग में अहमदाबाद मंदिर के स.गु. महंत शा.स्वा. हरिकृष्णदासजी तथा नारणघाट मंदिर के महंत छोटे पी.पी. स्वामी ने प्रेरणा मार्गदर्शन किया था। समस्त बापुनगर के हरिभक्तों को प.पू. महाराजश्री ने अति प्रसन्न होकर आशीर्वाद दिया।

इस प्रसंग पर नारणघाट मंदिर के महंत स्वामी देवप्रकाशदासजी, श्री नरनारायणदेव के पूजारी ब्र. राजेश्वरानंदजी आदि संतगण पधारे थे।

सभा संचालन स.गु. शा. स्वा. रामकृष्णदासजी तथा शा.स्वा. चैतन्यस्वरुपदासजी ( कोटेश्वर गुरुकुल ) ने की थी। अंत में ४००० जितने हरिभक्तों ने दर्शन-प्रसाद प्राप्त करके धन्यता की अनुभूति की थी। इस प्रसंग पर १०८ जितने मानव प्रेमी हरिभक्तोने ब्लड डोनेशन केम्प में रक्तदान किया था। - मनोज पटेल, श्री न.ना.देव युवक मंडल, बापुनगर

### प.पू. बड़े महाराजश्री के दिव्य संकल्प श्री स्वामिनारायण म्युझियम में प्रेरणात्मक संकल्पवाले श्रद्धालु भक्तगण

प.पू. बड़े महाराजश्री के दिव्य तथा अलौकिक संकल्प दिव्याति दिव्य श्री स्वामिनारायण म्युझियम में मुहुर्त से लेकर अभी तक हुई कई आश्चर्यकारक घटनाओं को हमने देखा है। जिसमें अहमदाबाद सीटी विस्तार खाड़िया में वाड़ापोल में रहने वाले प.भ. जेठाभाई मीठाभाई राठोड़ तथा पत्नी कांताबहन ( उम्र ९० तथा ८१ वर्ष ) प्राथमिक शाला विरमगाँव से निवृत हुए हैं। जिन के एक पुत्र हर्षदभाई हैं जो मंदबुद्धि के हैं। जो मंदबुद्धि की स्कूल में अभ्यास करते हैं।

परंतु यहाँ बात उनकी श्री स्वामिनारायण म्युझियम तथा उसके संकल्प कर्ता प.पू. बड़े महाराजश्री के प्रति उनकी निष्ठा-भावना की। इस वयोवृद्ध दंपत्ति ने अपनी पेन्शन की आवक में से तथा घरखर्च के रुपयो में ४०००/- की सेवा का योगदान करके महा भगीरथ सर्वोपरि से भी सर्वोपरि इस ब्रह्मांड में कही भी प्राप्त न हो सके ऐसे म्युझियम के निर्माण में सहयोग प्रदान किया है। जिन के पास स्वयं आवक का कोई स्त्रोत नहीं है कोई बड़ी संपत्ति भी नहीं है उनका इस प्रकार का संकल्प देखकर किसी का भी मन इस भावना को प्रणाम करने को कहेगा। और हमें भी सेवा करके इस कार्य के प्रति संपूर्ण समर्पित हो जाना चाहिए। श्रीजी महाराज ने ऐसे भी भक्तों को महान कहा है। उनकी सेवा के लिए उन्हें कोटि कोटि धन्यवाद। - प्रफुल खरसाणी

### जेतलपुरधाम के समकक्ष श्री स्वामिनारायण म्युझियम पदयात्रा ने एक युवान को नवजीवन दिया

अहमदाबाद के पास एक सत्संगी परिवार रहता है। नियम, निश्चय तथा पक्ष उनके जीवन में सह परिवार स्थापित है। प.पू.ध.धु. आचार्यश्री देवेन्द्रप्रसादजी महाराश्री, प.पू. बड़े महाराजश्री तथा वर्तमान प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री इस प्रकार समस्त धर्मकुल के प्रति उन्हें अति निष्ठा है। परंतु कभी कभी भक्त को जीवन में कुछ इलाज कोई डॉक्टर नहीं कर पा रहा था। निरंतर उसका वजन घटता जा रहा था। कोई रास्ता नहीं सूझ रहा था। लेकिन वे लोग किसी भी प्रकार की अंधश्रद्धा में चलित नहीं हुए। प.पू. महाराजश्री के दर्शन के लिए वे नित्य अपने नियमानुसार आते रहते। उस समय उन्होंने ऐसी उपाय बतायी जो कोई डॉक्टर भी नहीं बता सकता था। ऐसे महान पवित्र महाराजश्री के उपस्थिति में जहाँ अभूतपूर्व महाविष्णुयाग हुए है। इसी धरती पर श्री नरनारायणदेव का शतामृत पाटोत्सव मनाया गया है। इसी पुण्यशाली

धरती पर प.पू. लालजी महाराजश्री के वरद् हाथों से श्री स्वामिनारायण म्युझियम का खात मूहुर्त से लेकर अनेक पुण्य पावन कार्य हुए हैं। यहाँ का एक-एक कण प.पू. बड़े महाराजश्री के दिव्य अलौकिक चरणों से अति पावन हो गया है। ऐसे अलौकिक स्थान की पदयात्रा अपने गाँव से प्रारंभ की और श्री स्वामिनारायण मयुझियम तक आकर प.पू. बड़े महाराजी के दर्शन करके पूर्ण की। उसके बाद के सप्ताहों का रिपोर्ट नोर्मल आने लगा। आज वह सत्संगी युवक संपूर्ण तंदुरस्त है। ये है श्री स्वामिनारायण म्युझियम पदयात्रा की फलश्रुति। - धर्मेन्द्रभाई पटेल

**श्री स्वामिनारायण म्युझियम को कुंडाला के कला भगत का लोहे का गोला अर्पित किया गया**

संप्रदाय के इतिहास में बहुत प्रसिद्ध कुंडाल के कला भगत ने अपने इष्टदेव श्री स्वामिनारायण भगवान को याद करके गरम लोहे का गोला अपनी सत्यता को निश्चित करने के लिए उठाया था। यह लोहे का गोला उनकी परंपरा के वंशज अहमदाबाद के रहवासी प.भ. अमृतभाई सेंधाभाई पटेलने, प.पू. बड़े महाराजश्री को अर्पित किया। तथा उनकी पत्नी रमाबहन के कहने के अनुसार ११,०००/- रुपयों के साथ में अर्पण करके सेवा का सुंदर उदाहरण दिया था।

**एप्रोच (बापुनगर) श्री स्वामिनारायण मंदिर**

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा से तथा समग्र धर्मकुल के आशीर्वाद से तथा एप्रोच मंदिर के महंत स.गु. स्वामी लक्ष्मणजीवनदासजी की शुभ प्रेरणा से श्री गणेश चतुर्थी के दिन मंदिर में श्री गणेश स्थापन तथा विसर्जन धूमधाम से सम्पन्न हुआ था। भाद्र शुक्लपक्ष-११ के दिन साबरमती नदी में जल की प्राप्ति का उत्सव भी धूमधाम से मनाया गया। बड़ी संख्या में हरिभक्त गण पधारे थे। इस प्रसंग पर नरनारायणदेव युवक मंडल तथा घनश्याम मंडलने पारंपरिक ट्रेडीशनल ड्रेस के साथ रास-गरबा खेले थे। कई हरिभक्तों ने श्री स्वामिनारायण म्युझियम मेंअपनी सेवा लिखवाई थी। - गोरधनभाई सीतापरा

**श्री स्वामिनारायण मंदिर करजीसण का ८वाँ वार्षिक पाटोत्सव मनाया गया**

श्री नरनारायणदेव के श्री स्वामिनारायण मंदिर करजीसण का ८वाँ पाटोत्सव ता. १-११-२०१० सोमवार के दिन श्रीहरि के अपर स्वरुप प.पू. बड़े महाराजश्री १००८ श्री तेजेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री की शुभ निश्रा में तथा संत-हरिभक्तों की उपस्थिति में धूमधाम से मनाया गया। पाटोत्सव के मुख्य यजमान प.भ. विजयभाई विट्ठलदास पटेल (फलोरिडा) तथा सह यजमान पद पर २१ हरिभक्तों ने (अमेरिका) लाभ लिया।

प.पू. बड़े महाराजश्री पधारे थे। तब बहनों के मस्तक पर कलश रखकर भावपूर्वक उत्सव मनाया गया। समस्त बहनोंने प.पू. बड़ी गादीवालाश्री का भव्य स्वागत किया था। प्रासंगिक सभा में शा. आनंदजीवनदासजी, शा. भक्तवत्सलदासजी तथा पार्षद जसुभगतने प्रेरक वचन दिया था। "श्री करजीसण लीला चरित्र" पुस्तक का विमोचन प.पू. बड़े महाराजश्रीने किया था। प.भ. प्रहलादभाई पटेल ने आभार विधिकी थी। सभा के अंत में गाँव के तथा बाहर गाँव के सभी हरिभक्तों को यजमान की तरफ से भोजन खिलाया गया था। तथा "श्री करजीसण लीला चरित्र" पुस्तक की एक प्रति सभी को भेट स्वरुप दी गयी थी।- प्रहलादभाई वि. पटेल, करजीसण-न्युजर्सी

**श्री स्वामिनारायण मंदिर बोपल**

श्री स्वामिनारायण मंदिर बोपल में प.पू.ध.धु. आचार्य १००८ श्री कोशलेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री की आज्ञा से तथा शा.स्वा. धर्मवल्लभदासजी (अमेरिका) की प्रेरणा से तथा यहाँ के महंत साधु हरिवल्लभदास के मार्गदर्शन से चातुर्मास में भजन कीर्तन तथा कथा का आयोजन हुआ था। सावन महीने में भिन्न-भिन्न प्रकार के झूलोत्सव बनवाकर ठाकुरजी को झुलाया गया था।

ता. २५-८-२०१० से ता. २९-८-२०१० तक शा. व्रजवल्लभदास के वक्तापद पर सत्संगिजीवन प्रकरण-१ की कथा का लाभ हरिभक्तों को दिया था। श्रीकृष्ण जन्माष्टमी उत्सव भी धूमधाम से मनाया गया। इस प्रसंग पर कोठारी अमृतभाई पटेल, श्री के. आर. पटेल, आर.बी. पटेल, प्रशांत व्यास तथा युवक मंडल तथा उनावा गाँव के हरिभक्तों ने अपनी सेवा प्रदान की थी।

- प्रविणभाई उपाध्याय

### दहेगाँव (टेबला फली) श्री स्वामिनारायण मंदिर

यहाँ के श्री स्वामिनारायण मंदिर में काली चतुर्दशी के दिन श्री हनुमानजी का पूजन-अर्चन तथा आरती हरिभक्तों ने समूह में की थी।

दीपावली के शुभ दिन पर ठाकुरजी को अन्नकूट का भोग अ.नि. हंसाबहन हर्षदभाई पटेल के यजमान पद पर सम्पन्न हुआ था। समस्त समाज ने दर्शन का अलौकिक लाभ लिया था। इस प्रसंग पर ताराबा, शोभनाबहन, विणाबहन, ज्योतिबहन, छायाबहन, वैशालीबहन तथा फाल्गुनी बहन आदि सत्संगी बहनोने सुंदर सेवा की थी।

- अरविंदभाई कोठारी

### श्री स्वामिनारायण मंदिर ईडर

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा से तथा महंत स्वामी जगदीशप्रसाददासजी की प्रेरणा से ईडर मंदिर में विराजमान श्री गोपीनाथजी हरिकृष्ण महाराज के सानिध्य में सावन महीने में भिन्न-भिन्न झूले पर भगवान को झुलाया गया। श्री कृष्ण जन्माष्टमी, विजया दशमी को प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री का ३८ वाँ प्रागट्योत्सव तथा दीवाली के दिन भगवान को भव्य अन्नकूट का भोग आदि उत्सव धूमधाम से मनाया गया। हरिभक्त दर्शन कथा-वार्ता का लाभ लेकर धन्य हो गये थे।

- कोठारी सत्यसंकल्पदास

### हिंमतनगर में व्यसन मुक्ति की यात्रा निकाली गयी

हमारे प.पू.ध.धु. आचार्य १००८ श्री कोशलेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री का ३८ वाँ प्रागट्योत्सव के उपलक्ष्य में महंत शा. हरिजीवनदासजी तथा महंत स्वामी जगदीशप्रसाददासजी की प्रेरणा से हिंमतनगर शहर में व्यसन मुक्ति का विशाल जुलुस निकाला गया था।

जिसमें स्कूल के बच्चें व्यसनमुक्ति के सूत्रोच्चार के साथ उसका प्रचार कर रहे थे। जिस में ८ ट्रेक्टरों में व्यसन मुक्ति के सूत्रोच्चार करते हुए युवानों ने भाग लेकर व्यसनमुक्ति के विषय के चार्ट, पेंपलेट, बुकलेट का वितरण किया था। इस अभियान को गाँव में ले जाया गया था। उनके प्रचार प्रसार के लिए साथ में संतगणों ने भी अपना योगदान दिया था। - अरविंदभाई हिंमतनगर

### धरमपुर (खारवरीया) गाँव प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री का ३८ वाँ प्राकट्योत्सव मनाया गया

श्री नरनारायणदेव, अहमदाबाद, मूली ओर भूज कच्छ के शिखर वालें तथा हरि मंदिरो की तरफ से खाखरीया के धरमपुर गाँव के मंदिर में हमारे प.पू.ध.धु. आचार्य १००८ श्री कोशलेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री का ३८ वाँ प्रागट्योत्सव दशहरे के दिन ( आश्विन शुक्लपक्ष-१० ) ता. १७-१०-२०१० के दिन रात्रि में ७-३० से ८-३० तक ठाकुरजी के समक्ष प.पू. महाराजश्री की तसवीर का पूजन आरती अर्चन करके धूमधाम से कीर्तन भक्ति तथा कथावार्ता करके मनाया गया। अंत में सभी हरिभक्तों को प्रसाद खिलाया गया। - कोठारी कानजीभाई पटेल

### बामरोली (मध्यप्रदेश) में श्रीमद् भागवत सप्ताह पारायण

श्री नरनारायणदेव गदी के श्रीहरि के साक्षात् अपर स्वरुप आदि आचार्यश्री अयोध्याप्रसादजी महाराज के चरण कमल से जो भूमि पवित्र बन गई है। जिनके वचन आशीर्वाद से तथा गाँव में दूधकी धाराए बहती है। जिनके कारण बड़े-बड़े चोर-डाकू भक्त बन गये हैं ऐसे चंबल घाटी के बामरोली "श्री स्वामिनारायण मंदिर में प.पू.ध.धु. आचार्य १००८ श्री कोशलेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री की आज्ञा तथा यहाँ के महंत स्वामी लक्ष्मीनारायणदासजी की प्रेरणा से समस्त गाँव की तरफ से ता. १३-९-२०१० से ता. १९-९-२०१० तक श्रीमद् भागवत सप्ताह पारायण शा.स्वा. सत्यप्रकाशदासजी ( मूलीवाले ) ने हिन्दी में करके श्रोताजनों को अपनी वाणी का लाभ दिया था।

पाँचवे दिन गाँव के आसपास संत तथा हरिभक्तों ने खुले पाँव चलकर श्रीहरि तथा प.पू. अयोध्याप्रसादजी महाराजश्री का स्मरण किया था। प्रतिदिन ठाकुरजी का अभिषेक पूजन किया तथा अंतिम दिन समग्र गाँववालो ने महाप्रसाद खाया था। सभी गाँववालोने कथा-प्रसाद का लाभ लेकर धन्यता का अनुभव किया था।

- महंत स्वामी बामरोली

## मूली प्रदेश का सत्संग समाचार

### श्री स्वामिनारायण मंदिर लींबडी

बाल स्वरुप श्री घनश्याम महाराजश्री की कृपा से तथा प.पू.ध.धु. आचार्य १००८ श्री कोशलेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री की आज्ञा-आशीर्वाद से यहाँ के मंदिर में शरद उत्सव सोनी बटुकभाई ( कमालपुर ) के यजमान पद पर धूमधाम से मनाया गया। रासोत्सव तथा समूह आरती का भी आयोजन किया गया था। महंत स्वामीकी प्रेरणा से हरिभक्तों को सुंदर लाभ प्राप्त हुआ था।

- पूजारी वंदनप्रकाशदास

## विदेश सत्संग समाचार

### विहोकन न्युजर्सी श्री स्वामिनारायण मंदिर

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री तथा प.पू. बड़े महाराजश्री के आशीर्वाद-आज्ञा से तथा यहाँ के महंत गवैया स्वामी चंद्रप्रसाददासजी की प्रेरणा से सावन महीने में श्री नरनारायणदेव युवक मंडल के उत्साही युवक पंकज पटेल तथा रवि अमीन के मार्गदर्शन अनुसार ठाकुरजी को भिन्न-भिन्न कलात्मक झूले पर सजाकर झुलाया गया था। गवैया स्वामी चंद्रप्रकाश स्वामीने झुलोत्सव तथा भिन्न भिन्न कीर्तनों को राग में गाकर हरिभक्तों को मंत्रमुग्धकर दिया था।

पवित्र सावन महीने में नारणपुरा अहमदाबाद मंदिर के महंत शा.स्वा. श्रीजीप्रकाशदासजी तथा गवैया चंद्रप्रकाशदासजी ने हरिभक्तों को कथावार्ता का लाभ दिया था। पवित्र सावन महीने में यहाँ प.पू.अ.सौ. लक्ष्मीस्वरुपा बड़ी गादीवालाश्री तथा पू. बिन्दुराजा पधारी थीं तथा अपने निवास स्थान पर श्रीहरि कृष्ण महाराज के साथ पधारे शा.स्वा. श्रीजीप्रकाशदासजी तथा गवैया चंद्रप्रकाशदासजी को अलौकिक भोग बनाकर हजूरी पार्षद वनराज भगतने भोजन करवाया था। तथा धोती ओढ़ाकर अति प्रसन्न किया था। विहोकन मंदिर में विजया दशमी का उत्सव मनाया गया।

१७ अक्टूबर रविवार को दशहरा के शुभ दिवस पर बहनो की सभा में पूज्य बिंदुराजा तथा श्री सुव्रतकुमार तथा श्री सौम्यकुमार के शुभ सानिध्य में तथा महंत गवैया स्वामी चंद्रप्रकाशदासजी की शुभ उपस्थिति में प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री १००८ श्री कोशलेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री का जन्मोत्सव विधिवत रुप से हरिभक्तों ने समूह में मनाया था। गवैया स्वामीने प्रथम प.पू. महाराजश्री की तसवीर का पूजन अर्चन करके हरिभक्तों के साथ आरती उतारकर धर्मकुल का माहात्म्य सभा में कहा था। तथा नंद संतो द्वारा रचित धर्मकुल के कीर्तन को सुंदर राग में गाया था। उत्सव के यजमानो को सुंदर लाभ मिला था। मंदिर के प्रेसिडेन्ट प.भ. भक्तिभाईने आगामी उत्सवो की घोषणा की थी। महंत स्वामीने सेवा करनेवालों का योग्य सन्मान किया था। - हजुरी पार्षद वनराज भगत

### श्री स्वामिनारायण मंदिर कोलोनिया में श्री गणेश चतुर्थी उत्सव मनाया गया

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री तथा प.पू. बड़े महाराजश्री की आज्ञा आशीर्वाद से सितंबर शनिवार की शाम ६-०० बजे कोलोनीया श्री स्वामिनारायण मंदिर में श्री गणेश चतुर्थी महोत्सव धूमधाम से मनाया गया। श्री पिनाकीन जानीने श्री गणपति महाराज का यजमान परिवार द्वारा विधिवत पूजन आरती करवाई थी। गवैया स्वामीने इस सभा में श्री गणपतिजी की महिमा-माहात्म्य के साथ सुंदर कीर्तन भी गाये थे। सभी ने दर्शन करके प्रसाद ग्रहण किया था।

### कोलोनीया मंदिर में प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री का ३८ वाँ प्रागट्योत्सव मनाया गया

कोलोनीया के श्री स्वामिनारायण मंदिर में १६ अक्टूबर शाम को विहोकन, चेरीहील, पार्सीपोनी, न्युयोर्क तथा कोलोनीया स्थित हजारों हरिभक्तजनों की उपस्थिति में हमारे प्राणप्यारे विश्ववंदनीय प.पू.ध.धु. आचार्य १००८ श्री कोशलेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री का ३८ वाँ प्राकट्योत्सव तथा आई.एस.एस.ओ. स्थापना दिन दशहरा के शुभ मंगल दिवस पर धूमधाम से मनाया गया। गवैया चंद्रप्रकाश स्वामी तथा ज्ञानप्रकाशदासजी स्वामी तथा हरिभक्तों ने साथ मिलकर प.पू. महाराजश्री की तसवीर का पूजन अर्चन करके आरती उतारकर जन्मोत्सव

मनाया । इस प्रसंग पर प.पू. महाराजश्री की बहन श्री पू. बिन्दुराजा तथा श्रीसुव्रतकुमार तथा श्रीसौम्यकुमार के साथ पधारे थे। दोनो बालकोंने पू. महाराजश्री के जन्मोत्सव के जन्मदिन का केक काटकर "हेपी बर्थ-डे महाराजश्री" के नारों के साथ समग्र होल गुंज उठा था। महंत स्वामीने दशहर की हमारें प.पू. महाराजश्री तथा धर्मकुल की महिमा का सुंदर वर्णन किया था । हरिभक्तगण बड़ी संख्या में पधारे थे । सभीने साथ मिलकर प्राणप्यारे पू. महाराजश्री का ३८ वाँ प्राकट्योत्सव धूमधाम से मनाकर अंत में प्रसाद ग्रहण किया था।

### कोलोनीया मंदिर में पाँचवां पाटोत्सव मनाया गया

यहाँ के श्री स्वामिनारायण मंदिर कोलोनीया में प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री तथा प.पू. बड़े महाराजश्री की आज्ञा-आशीर्वाद से प.पू. आचार्य महाराजश्री, प.पू.अ.सौ. गादीवालाश्री, पू. बिन्दुराजा श्री सुव्रतकुमार, श्री सौम्यकुमार तथा ब्रह्मनिष्ठ संत पू.पी.पी. स्वामी, पू. नारायणवल्लभदासजी स्वामी, पू. शा. श्रीजी स्वामी, महंत शा.स्वा. धर्मवल्लभदासजी, तथा पूजारी हरिनंदन स्वामी, चेरीहिल मंदिर से महंत स्वा. विश्वप्रकाशदासजी, विहोकन मंदिर के महंत चंद्रप्रकाशसदासजी तथा हजूरी पार्षद वनराज भगत आदि संत-हरिभक्तों के साथ ठाकुरजी का पाटोत्सव-अभिषेक प.पू. महाराजश्री के वरद् हाथों से विधिपूर्वक षोडशोपचार के साथ धूमधाम से मनाया गया । इस प्रसंग के उपलक्ष में पू. शा.स्वा. श्रीजीप्रकाशदासजी ने वनविचरण की कथा को अत्यंत भावपूर्ण सैली में कहा था । इस कथा के पूर्व बहनोंने सुंदर पोथी यात्रा निकाली थी । पारायण के यजमान परिवार द्वारा विष्णुयाग की आहुति प्रदान की गयी थी । सभा में प.पू. महाराजश्री का तथा ब्रह्मनिष्ठ संतो का स्वागत पूजन हरिभक्तोंने करके आशीर्वाद प्राप्त किये थे । संतो की प्रेरक वाणी के बाद प.पू. महाराजश्रीने सभी भक्तजनों को दिव्य आशीर्वाद दिये थे । अंत में सभी भक्तजनोनें कथा श्रवण-दर्शन करके प्रसाद ग्रहण करके विदाई ली थी ।-प्रविणभाई शाह

### वोशिंग्टन डी.सी. आई.एस.एस.ओ. चेप्टर

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री तथा प.पू. बड़े महाराजश्री की आज्ञा-आशीर्वाद से यहां २१ अगस्त शनिवार शाम ५-०० से ९-३० तक इक्लरीझहोल में सत्संग सभा में कथावार्ता धून कीर्तन नित्य नियम तथा ठाकुरजी की आरती-भोग का आयोजन समूह में किया गया था । कोलोनीया मंदिर से पू. हरिवल्लभ स्वामीने लाईव प्रवचन द्वारा सुंदर कथा सुनाई थी ।

१० सितंबर शुक्रवार की शाम ७-१५ से ९-०० तक ईल्करीझ के होल में सत्संग सभा "आज मारे ओरडे" के कीर्तन के साथ शुरु हुई । जिसमें वचनामृत कथा, धून, कीर्तन तथा नित्य नियम करके ठाकुरजी की भोग-आरती की गई । एल.ए. मंदिर से शा.स्वा. धर्मकिशोरदासजीने सेलफोन द्वारा कथा का अलौकिक लाभ दिया था ।

१, अक्टूबर शुक्रवार शाम ७ से १० तक सत्संग सभा में शिकागो से पू. जे.पी. स्वामी तथा पू. हरिप्रसाद स्वामीने पधारकर श्रीहरि की लीला चरित्र की कथा का अलौकिक लाभ प्रदान किया था ।

१६, अक्टूबर शनिवार शाम ४-३० से १०-३० तक ईल्करीझ के चर्च में सत्संग सभा नियमित रुप से होती है । धून कथा-वार्ता कीर्तन आदि आयोजन किया गया था । ह्युस्टन मंदिर से शा.स्वा. धर्मकिशोरदासजीने प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री का ३८ वाँ जन्मोत्सव के प्रसंग पर धर्मकुल का माहात्म्य अपनी शैली में सेलफोन द्वारा डेढं घंटे तक कथा का लाभ दिया था । सभा में प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की तसवीर का पूजन-अर्चन आरती करके बर्थडे केक काट्कर सभीने मिलकर जन्मोत्सव को धूमधाम से मनाया था । प.पू. बड़े महाराजश्री तथा प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की कृपा-आशीर्वाद से यहाँ सत्संग की प्रवृति अच्छी चल रही है ।- कनुभाई पटेल

### श्री स्वामिनारायण मंदिर लेस्टर (यु.के.) में प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री का ३८वाँ पाटोत्सव मनाया गया

यहाँ के श्री स्वामिनारायण मंदिर लेस्टर में हमारे प.पू.ध.धु. आचार्य १००८ श्री कोशलेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री का ३८ वाँ प्रागट्योत्सव विधिपूर्वक धूमधाम से संत-हरिभक्तों ने मिलकर समूह में मनाया ।

प.पू. महाराजश्री की तसवीर का पूजन-अर्चन आरती समूह में करके सेवा का अलौकिक लाभ लिया था। प.भ. रणछोडभाई गंगदासभाई चोटलीया तरफ से जन्मोत्सव के उपलक्ष में ६ धंटे तक अखंड महाधून की गई थी।

शा.स्वा. सत्यसंकल्पदासजी तथा शा. सुव्रतस्वरुपदासने धर्मवंशी महाराज की महिमा सभा में कहाँ के रुप में कहा था। साथ में आई.एस.एस.ओ. के स्थापना दिन का माहात्म्य मंत्रीश्री कानजीभाई मावजीने कहा था। यजमानश्री तथा हरिभक्तोने केक काटकर जन्मोत्सव मनाया। श्री किरणभाई भावसारने आभार विधिकी थी। इस प्रसंग पर श्री नरनारायणदेव युवक मंडल, श्रीजी सेवा मंडल तथा श्री भक्ति महिला मंडल की सेवा प्रेरणारुप है। हरिभक्तों ने विशाल संख्या में दर्शन करके प्रसाद का लाभ लिया था। प.पू. महाराजश्री तथा प.पू. बड़े महाराजश्री की कृपा से सत्संग प्रवृत्ति अच्छी चल रही है।

- किरण भावसार

## अक्षरनिवासी हरिभक्तों को भावभीनी श्रद्धांजलि

**लंडन विल्सडनलेन :** प.भ. धनबाई मनजी हालाई ( सुरजपर कच्छवाले ) ता. २१-१०-२०१ के दिन सर्वोपरि भगवानश्री स्वामिनारायण का अखंड स्मरण करते हुए अक्षरनिवासी हुए थे। श्रीहरि उनको अपने अक्षरधाम में जाने का सुख प्रदान करे तथा उनके परिवार को धैर्य तथा बल प्रदान करें ऐसी श्री नरनारायणदेव के चरणों में प्रार्थना।

**नारायणपुरा (ता. कडी) :** प.भ. केशवलाल परसोत्तमदास ता. १७-१०-२०१० के दिन श्रीहरि का अखंड स्मरण करते हुए अक्षरनिवासी हुए।

**अहमदाबाद (गुलाबपुरा) :** श्री नरनारायणदेव गादी के अनन्य निष्ठावान प.भ. गांडालालभाई, प.भ. अमृतभाई तथा प.भ. विष्णुभाई की माताजी प.भ. नाथीबहन कालीदास पटेल आश्वीन शुक्लपक्ष-१० विजया दशमी के दिन ता. १७-१०-२०१० के दिन श्रीजी महाराज का अखंड स्मरण करती हुइ अक्षरनिवासिनी हुई हैं।

**मणियोर (ता. ईडर) :** हमारे श्री स्वामिनारायण मंदिर अहमदाबाद के एकाउन्टन्ट प.भ. ईश्वरभाई मोहनभाई पटेल ( सापावाडावाले ) की बड़ी बहन अ.सौ. शांताबहन रेवाभाई पटेल भाद्र कृष्णपक्ष-११ ( उं. ५८ वर्ष ) को ता. ४-१०-२०१० के दिन श्रीहरिका अखंड स्मरण करती हुइ अक्षरनिवासिनी हुई हैं।

**अंधेरी-मुंबई :** प.भ. रमणलाल मोतीलाल डणाक ( उं. ९७ वर्ष ) आश्विन शुक्लपक्ष-१३ के बुधवार को ता. २०-१०-२०१० के दिन श्रीहरिका अखंड स्मरण करते हुए अक्षरनिवासी हुए थे।

**अहमदाबाद-जीवराजपार्क :** श्री नरनारायणदेव तथा प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री के अनन्य निष्ठावान, सक्रिय हरिभक्त प.भ. भरतभाई तथा धनंजयभाई की माताजी प.भ. जयाबहन कांतिलाल ठक्कर ता. १९-१०-२०१० के दिन श्रीहरि का अखंड स्मरण करती हुइ अक्षरनिवासिनी हुई हैं।

**बलोल-भाल :** प.भ. दिपसंगभाई मेघाभाई की धर्मपत्नी प.भ. जीजीबहन ता. ३१-१०-२०१० के दिन श्रीहरिका अखंड स्मरण करती हुइ अक्षरनिवासिनी हुई हैं।

**अहमदाबाद-नारणपुरा :** प.भ. मुकेशभाई तथा गिरीशभाई की माताजी प.भ. ताराबहन मनसुखलाल गांधी ता. ३-१०-२०१० के दिन श्रीहरिका अखंड स्मरण करती हुइ अक्षरनिवासिनी हुई हैं।

**अहमदाबाद :** प.भ. धीरुभाई सोरठीया ( एप्रोच-बापुनगर मंदिर के अग्रणी हरिभक्त ) के पिताश्री प.भ. जेरामभाई जीवराजभाई आश्विन कृष्णपक्ष-१४ गुरुवार ता. ४-११-२०१० के दिन श्रीहरिका अखंड स्मरण करते हुए अक्षरनिवासी हुए हैं।

**धांगधा :** प.भ. हरिभाई घेलाणी ता. २२-१०-२०१० के दिन श्रीहरिका अखंड स्मरण करते हुए अक्षरनिवासी हुए हैं।

संपादक, मुद्रक एवं प्रकाशक : महंत शास्त्री स्वामी हरिकृष्णदासजी द्वारा, श्री स्वामिनारायण मंदिर, कालुपुर, अहमदाबाद के लिए श्री स्वामिनारायण प्रिन्टींग प्रेस, श्री स्वामिनारायण मंदिर, कालुपुर, अहमदाबाद ( गुजरात ) पीन कोड-३८० ००१ से मुद्रित एवं श्री स्वामिनारायण मंदिर, कालुपुर, अहमदाबाद ( गुजरात ) पीन कोड-३८० ००१ द्वारा प्रकाशित।


१


२


३


४


५


६

१ ) ओस्ट्रेलिया में युवक मंडल के शिबिर में ठाकुरजी की आरती उतारते हुये प.पू. आचार्य महाराजश्री ( २ ) अपने करांच
स्वामिनारायण मंदिर में नवरात्री का उत्सव वहाँ के स्थानिक लोगोंने मनाया ।( ३ ) नारायणघाट मंदिर में शरद पूनम
ग पर समूह आरती उतारते हुये हरिभक्त ।( ४ ) शरदोत्सव प्रसंग पर कालुपुर श्री स्वामिनारायण मंदिर में आरती उतार
ये प.पू. बड़े महाराजश्री ।( ५ ) डांगरवा के जतनबा के परिवार वालों द्वारा प्रसादी की वस्तु प.पू. बड़े महाराजश्री को श्
वामिनारायण म्युझियम के लिये भेंट दी गयी, साथ में शा.स्वा. निर्गुणदासजी ( ६ ) गुजरात पुलिस महानिर्देशक श्
डवावाला साहब म्युझियम को देखने के बाद प.पू. बड़े महाराजश्री का दर्शन करते हुये ।

Registered under RNI - No - GUJHIN/2007/20220 " Permitted to post at Ahd PSO on 11 the every month under postal Regd. No. GUJ. 581/9-11 issued SSP Ahd Valid up to 31-12-2011



प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री के ३८ वाँ जन्मोत्सव ईडर में मनाया गया, इस प्रसंग पर बड़ी संख्या में संत हरिभक्तों को दर्शन का लाभ देते हुये श्रीहरि के तीनों अपर स्वरुप।



निर्माणाधिन श्री स्वामिनारायण म्युझियम के मुख्य प्रवेश द्वार के खात मुहूर्त करते प.पू. लालजी महाराजश्री

# Museum Year
March 2010 - March 2011

shree swaminarayan museum

## इ.स. २०१०-११ का वर्ष "म्युझियम वर्ष"

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री १००८ श्री कोशलेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री की आज्ञा से मार्च २०११ वर्ष "म्युझियम वर्ष" के रुप में प्रकाशित किया जाता है।

## उद्घाटन ८ मी मार्च २०११

संवत २०६७ फागुन शुक्ल तृतीया को श्री नरनारायणदेव पाटोत्सव

www.swaminarayanmuseum.com/org